...ांक फरवरी १९८७

...र दीप

...ंकार मिश्र 'प्रणव', शास्त्री

...ती

'मधुर-लोक' मासिक पत्र, दिल्ली

चेयरमैन :

दिल्ली आदर्श फाईनैंशियर्स प्रा० (लि०)

श्री विद्याप्रकाश जी सेठी

सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से जिनके विचारों में परिवर्तन आया। आज सच्चे आर्य वीर और कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा दानवीर
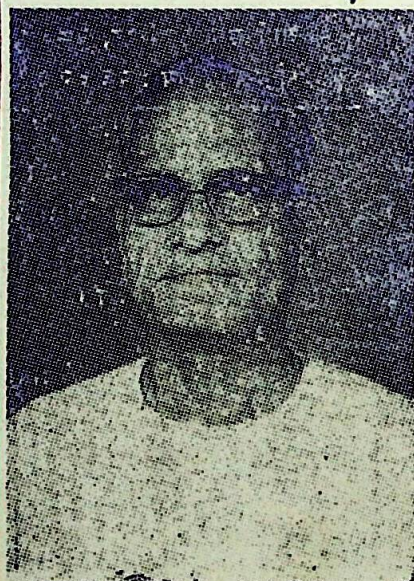
आर्य श्री गुलाबचन्द जी बंसल

(विशेष समाचार पृष्ठ ५ पर पढ़ें)

सदाचार और नव-निर्माण का हिन्दी मासिक-पत्र

मधुर-लोक

वर्ष—२२, अङ्क—४ वार्षिक शुल्क—३० रुपये

संचालक एवं सम्पादक—राजपाल सिंह शास्त्री

विज्ञापन-व्यवस्थापक—देवपाल सिंह आर्य

सम्मानित सम्पादक—श्री ओंकार मिश्र 'प्रणव'

अवैतनिक सम्पादक—परमेश शर्मा

"मधुर-लोक" कार्यालय

आर्य समाज मन्दिर, २८०४, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६

फोन कार्यालय : २६ ८२ ३१, फोन निवास : ५१ ३२ ०६

"मधुर-लोक" के व्यवहारिक नियम

१. मधुर लोक का वार्षिक मूल्य ३० रुपये है।

२. जो सज्जन ३०१) भेजकर मधुर-लोक के ग्राहक बनेंगे वे आजीवन सदस्य होंगे। उनको 'मधुर-लोक' के सभी अङ्क और विशेषांक भी यथासमय मिलते रहेंगे।

३. 'मधुर-लोक' में प्रकाशनार्थ लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री सम्पादक 'मधुर-लोक' सीताराम बाजार, दिल्ली के पते पर भेजिए।

४. 'मधुर-लोक' मासिक पत्र वी. पी. द्वारा न मँगायें अपितु ३०) रुपए वार्षिक शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजकर नियमित सदस्य बनें।

५. 'मधुर-लोक' प्रत्येक मास की ८-९ तारीख तक भेज दिया जाता है। यदि २० तारीख तक न मिले तो पत्र लिखकर मँगा लें।

६. ग्राहकों को अपना वार्षिक शुल्क समाप्त होते ही भेज देना चाहिए। पत्राचार में ग्राहक संख्या अवश्य दें।

७. नमूना अङ्क के लिए केवल तीन रुपए के डाक टिकट भेजिए।

सम्पादक—

विवाह और दहेज

जो नियम पूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रपण करे वह विवाह कहलाता है। पुत्र और पुत्री परस्पर विवाह के बारे में ही जो निश्चय करें वही उत्तम विवाह होता है। पुत्र और पुत्री की प्रसन्नता के बिना विवाह नहीं होना चाहिए। अप्रसन्नता के कारण होने वाले विवाह में सदा क्लेश ही होता है। माता-पिता के द्वारा होने वाले विवाह में प्राय: अधिक क्लेश बनते हैं। इसी प्रकार देश की हानि होती चली आ रही है।

विवाह काल में प्राय: दोनों की विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कुल, शरीर का प्रमाण आदि यथायोग्य होना चाहिए।

जो कोई गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है, वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है। गृहस्थाश्रम चारों आश्रमों में श्रेष्ठ और उत्तम है। शेष तीनों आश्रम वाले गृहस्थी के आश्रित ही रहते हैं। अत: गृहस्थाश्रम सर्वोत्तम है। मनु महाराज मनुस्मृति में लिखते हैं—

यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तव:।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमा:॥

अर्थात् जैसे वायु के आश्रय से सब जीवों का वर्त्तमान सिद्ध होता है, वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी अर्थात् सब आश्रमों का निर्वाह गृहस्थ के आश्रय से होता है।

जिस प्रकार विधि पूर्वक विवाह संस्कार होना आवश्यक है। इसी प्रकार संस्कार विधि के अनुसार किया हुआ वर के निमित्त दान-दहेज भी उचित और सम्मान जनक होता है। उसी से प्रत्येक व्यक्ति को सन्तुष्ट रहना चाहिए। कोई मांग विशेष कष्टप्रद होती है।

यह भी ठीक है कि माता-पिता का कर्त्तव्य बन जाता है कि पुत्र-पुत्रियों का समान अधिकार समझ कर यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। अपनी सम्पत्ति में से पुत्री के निमित यथाशक्ति भरपूर देना चाहिए।

जब वधू पक्ष वाले अपनी सामर्थ्य से अपनी पुत्री के निमित्त न्यून भाग प्रदान करता है तभी घर में क्लेश हो जाता। इसी प्रकार वर पक्ष को भी कभी भी बलपूर्वक कोई मांग नहीं प्रस्तुत करनी चाहिए। सदा परस्पर सहर्ष आदान-प्रदान करते-कराते रहना चाहिए। तभी तो गृहस्थ में सुख-शान्ति सम्भव है।

अज्ञानता के कारण ही दुःख दारिद्रय बढ़ रहा है। प्रभु सभी गृहस्थियों को सद्बुद्धि प्रदान करें और विवाह संस्कार की विधि को ठीक प्रकार से क्रियान्वित करने की सामर्थ्य दें ताकि परस्पर सखत्व भाव अधिक बढ़ सके।

समाजसेवी, परोपकारी एवं दानी

आर्य श्री गुलाबचन्द जी बंसल

'सत्यार्थ प्रकाश' के स्वाध्याय से ही जिनके विचार बदल गये

हाथरस (अलीगढ़ उ०प्र०) में ७ दिसम्बर १९२२ ई० को आपका जन्म हुआ। 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय भाग लेने के कारण आपने मैट्रिक के पश्चात् शिक्षा छोड़ दी। कांग्रेस में सक्रिय कार्यकर्त्ता होने के कारण आपके माता-पिता ने सन् १९४३ में विवाह कर दिया। आपका विवाह संस्कार श्रीमती दामीदेवी से ग्वालियर में हुआ।

इधर जब आप १५ वर्ष के ही थे, तभी ऋषिकृत 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ते-पढ़ते ही विचार परिवर्तित होते चले गये। यद्यपि आपके पूर्वज वल्लभ कुल सम्प्रदाय के अनुयायी थे। किन्तु आपने सबको तिलांजली देकर 'वैदिक धर्म' को स्वीकारा। यह आपकी एक विशेष महानता है। शनैः-शनैः वैदिक साहित्य तथा ग्रन्थों का स्वाध्याय होता रहा तभी आपने आर्य समाज हाथरस की सदस्यता भी स्वीकार की। और क्रमशः पुस्तकाध्यक्ष तथा कोषाध्यक्ष जैसे पदों के कार्यों को सम्भाला। साथ-साथ आर्य वीर दल को भी संचालित किया।

गृहस्थाश्रम की परम्पराओं को निभाते हुए आपने अपनी अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए साबुन, हौजरी निर्माण तथा कपड़ा व्यापार को करते हुए आप हाथरस से १९५० से १९५९ तक ग्वालियर में साबुन आदि का व्यापार किया।

ग्वालियर में भी आर्य समाज में सार्वजनिक आर्य पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना की। कई आय शिक्षण - संस्थाओं में योगदान भी किया।

१९५९ के पश्चात आप भिलाई (म०प्र०) आ गये। यहाँ अपना

आजीविका हेतु थोक वस्त्र एवं स्टील फैक्टरी आदि के कार्य से प्रारम्भ किया। सामाजिक और धार्मिक जीवन व्यतीत करते-करते आपने आर्य समाज के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।

१९७९ से १९८४ तक आप आ० स० मठपारा दुर्ग के अध्यक्ष पर कार्य करते रहे। साथ ही साथ आर्य शिक्षण संस्थाओं के गरिमा युक्त पदों पर कार्य करते रहे।

परमपिता परमेश्वर की अपार कृपा से आज आपका पूरा परिवार सम्पन्न है। आपके ५ पुत्र विवाहित हैं, शेष ४ पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ अभी अविवाहित हैं। सभी सुयोग्य एवं उच्चतम शिक्षित हैं। घर पर साप्ताहिक आर्य सत्संग होता है। सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार, वैदिक साहित्य का वितरण भी किया जाता है।

आप १९७२ में विश्व आर्य सम्मेलन मोरिशस में भी सम्मिलित हुए।

आप अनेक गुरुकुलों को आर्थिक सहयोग देते रहते हैं। इसी प्रकार परोपकारी एवं जन-कल्याण हेतु कार्यों को संचालित करने के लिए आपका एक ट्रस्ट भी पंजीकृत है।

परिवार के सभी सदस्यों के यथासमय होने वाले संस्कार भी वैदिक रीति से सम्पन्न होते हैं। घर का वातावरण भी पूर्णतः शुद्ध, सतोगुणी एवं आर्य है।

आजकल श्री बंसल जी संस्कृत के अध्ययन, योग आसन तथा प्राणायाम के अभ्यास में व्यस्त हैं।

प्रभु! ऐसे आर्य परिवार को सद्बुद्धि, स्वास्थ्य तथा चिरायु प्रदान करें, ताकि यह आर्य परिवार सदा प्रगतिशील होकर परोपकार एवं जन-कल्याण कर सकें।

—राजेन्द्र आर्य

अ म र - दी प

माँ से

माँ, यही वरदान दे दो।

ये असत् मारीच मेला मान मिथ्या का मनाएं,
बुद्धि सीता के हरण की कर रहे हैं, कामनाएं।
जो इन्हें भू पर सुला दे।
सत्य शर-सन्धान दे दो ॥१

कज्जलों के कुञ्जरों को मोह की मदिरा पिलाये,
ये अमावस के सहोदर जूझने को शत्रु आये।
जो न झञ्झा से झुके, वह,
दीप का अरमान दे दो ॥२

युग युगों से मृत्यु मिस के विविध वर वाहन सजाती,
है चली आती निरन्तर जीत का डङ्का बजाती।
जिन्दगी हारे न इससे,
वह अमृत का पान दे दो ॥३

: १ :

ओ३म् असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्यो र्माऽमृतं गमय ॥

मातृभूमि

जयति जय-जय मातृभूमे ।
जयति जय-जय आर्यभूमे ।।

तू विधाता की समर्पित पावमानी ध्रुव-धरोहर,
हिम-किरीट सुशोभिता नवरत्न गर्भा मधु-मनोहर ।
आदि जननी मानवों की श्रुति-सुधा पूरित सरोवर
दे रही संसार को सुख-शान्तिमय सन्देश भूमे ।।१

अग्नि, वाय्वादित्य अङ्गिर की रही क्रीडास्थली,
मनु-विधान प्रमाण प्रभुता की रही होमस्थली ।
है, जहां शुचि ज्ञान की भी किरण प्रथमा प्रिय खिली,
ऋषि, महर्षि, मुनीश्वरों से योगियों से व्याप्त भूमे ।।२

अङ्क में आदर्श खेला राम या घनश्याम सा है,
प्रस्फुटित वीरत्व मारुति, पार्थ या बलराम सा है ।
अश्वमेध प्रतीक प्रकटित भू विजय संग्राम सा है,
इसलिए संसार ने भी मान ली तू मान्य भूमे ।।३

चरित चन्दन ही तुम्हारा भाल पर धारण किया है,
विरुद-वन्दन युगधरों ने बन सदाचारण किया है ।
दैत्यदर्प धुरन्धरों का इन्द्र बन दारण किया है,
देवता गाते रहे हैं, जय-विजय के गान भूमे ।।४

कवि कवीश्वर कह रहे हैं जगद् वन्द्य ललाम तुझको,
चरण नत विज्ञान कहता धर्म, धैर्य-विराम तुझको ।
रवि दिशाएं जानती हैं नित्य नाम-निकाम तुझको,
आई त्रिगुण त्रय ताप-तारिणी, बार-बार प्रणाम भूमे ।।५

: २ :

बालक

सर्ग के आदिम सुन्दर रूप नमन हो तुमको शत शतवार।
निरंजन नर-निधि नवल अनूप नमन हो तुमको शत शतवार ॥
हुआ जीवन का वरद विहान उषा की किरणें बन आये।
तुम्हारे स्वागत के सामान सने ही शीघ्र सजा लाये,
छिपा प्रिय रोदन में नित्य हास्य का प्यारा सा परिवार ॥१

मनुज-वीणा के मंगल गान तुम्हारी सृष्टि निराली है,
विश्व के बाल रूप भगवान् तुम्हारी दृष्टि निराली है।
मुट्ठियों में कर लाये बन्द दुःख या सुख के नव उपहार ॥२

तुम्हारी मञ्जुल मधु मुसकान कला चपला ने साजी है,
तुम्हारी सुन्दरता की खान देख युग हारा, बाजी है।
सुरक्षित प्रकृति प्रिया की एक अलौकिक अनुपम निधि साकार ॥३

तुम्हीं हो नूतनता के रूप, तुम्हीं हो पावन प्रिय प्राचीन,
तुम्हीं हो भावी के प्रारूप तुम्हीं हो वर्तमान के बीन।
युगों का इतिहासों के पृष्ठ प्रल्लिखित आमुख आविष्कार॥४

आश के दीपक दिव्य महान् मनुज मन के उजियारे हो,
मुक्ति के साधन सीप सुजान बन नयनों के तारे हो।
ज्योतिमय जीवन तरणी के प्रकाशित पौरुष के पतवार ॥५

क्रान्ति के बनकर अग्रिमदूत कभी ज्वाला भड़काते हो,
शान्ति के बनकर सत्य सपूत कभी तो सुख सरसाते हो।
मनो मन्दिर में 'प्रणव' ज्ञान भरित है आगम अगम अपार॥६

अलौकिक समता के सम्राट् यशोधन साहस-सिन्धु ललाम,
विश्व के बौद्धिक देव विराट मनोरंजन के मधुर विराम।
महत्ता तटिनी निष्काम नरोत्तम निर्झर निर्मल धार ॥७

: ३ :

श्रीराम

कौशलेश दशरथ के नन्दन युग ने तुम्हें पुकारा है ।
धन्य-धन्य रघुवंश शिरोमणि, उज्ज्वल नाम तुम्हारा है ॥

बीते लाखों वर्ष हर्ष से तुमको रहे मनाते,
श्रद्धा-सुमन विश्व के जन-मन तुमको भेंट चढ़ाते हैं ।
मर्यादा पुरुषोत्तम का पद तुमने पाया प्यारा है ॥१

संघर्षों के शिखर चूमने का तुमको अभ्यास रहा,
विश्वामित्र, वशिष्ठ आदि का प्राप्त सदा विश्वास रहा ।
बलिदानों से सतत पार की वरदानों की धारा है ॥२

रचा त्याग का याग राज्य को तृण सम तुमने ठुकराया,
भ्रातृभाव सौजन्य, स्नेह से पतित जनों को अपनाया ।
खलबल दूषण दैत्य दलों पर वर विक्रम विस्तारा है ॥३

चमक रहा आदर्श तुम्हारा चारित्रिक ध्रुवतारे सा,
सुधी तुलाएं तोल न सकती गुरु-गौरव गुण पारे सा ।
सागर ना पनपाया अब तक गहरी जीवन धारा है ॥४

त्रेता युग में जो कि बजाया अमर विजय का डंका है,
अपने शौर्य ज्वाल से फूंकी स्वार्थ स्वर्ण की लंका है ।
काल जानता सदाचार ने दुराचार संहारा है ॥५

पौरुष, निश्चिल नीति संघठन सृजन की प्रभुताएं,
पत्नीव्रत, परमार्थ, प्रतिज्ञा-पालन, यश की रचनाएं ।
धरा धरोहर धवल ध्येय को शत-शत नमन हमारा है ॥६

: ४ :

जय हनुमान

जयति जयवीर वन्द्य हनूमान्।
व्रती ब्रह्मचारी निष्ठावान् ॥

अंजनी जननी के प्रिय अंश, पवन के पावन कुल अवतंस।
महत्ता मानस के कलहंस, विवेकी नीर-क्षीर विधान ।।१

सुहृद संयम से ओत:प्रोत, शक्ति के अनुपम अविरल स्रोत।
विघ्न वारिधि के दृढ़तम पोत, भानु सम प्यारे ज्योतिष्मान्।२

अलौकिक आभा के आलोक-लोक के नायक पुण्य श्लोक।
कीर्त्ति के सुरभित फुल्लित कोक भक्त भ्रमरों के रस की खान।।३

तपस्या-तरणी के पतवार, शास्त्र-श्रुति अर्थों के संसार।
व्याकरण विद्या के भण्डार, मधुमती महिमा के मेहमान ।।४

कर्म की लेकर मर्म मशाल, दिखाया तुमने वीर कमाल।
उच्च था सेवा ही भाल, रहे निष्काम सदा मतिमान् ।।५

तुम्हारा देखा अद्भुत त्याग, रचाया प्रेमभाव का याग।
राम ने अपनाया, अनुराग-राग के गा-गा गौरव गान ।।६

सती प्रिय सीता को सन्देश, ले गये लंका में सविशेष।
हरा लक्ष्मण का जीवन-क्लेश, जिताया तुमने ही मैदान ।।७

तुम्हारा गुण गौरव साकार, दे रहा सेवा का उपहार।
विश्व को प्रामाणिक आधार, तुम्हारा जीवन मंत्र महान्।८

राम के दिव्य दूत द्युतिधाम, पुण्य के प्रियतर पूर्ण विराम।
वीर वीर! बारम्बार प्रणाम, विजय के हे ध्वज धवल निशान।।९

सन्त तुलसीदास

धन्य हे सन्त शिरोमणिधन्य, धन्य हे, कविता के अवतार।
धरणि में धूम मची चहुं ओर, गगन में गूंजा जय जयकार ॥१

यवनमत शासन की उद्दण्ड चतुर्दिग् आग बरसती थी,
स्वर्ग भू भारत की सुख शान्ति सत्व के लिए तरसती थी।
दिनोदिन मर्यादा थी भङ्ग उजड़ते थे वन विज्ञ-विचार,
बने तुम श्रावण के घनश्याम, बहा दी मानस की रसधार ॥२

धर्म, धृति, कर्म-मर्मव्रत नियम नम्रता का होता था लोप,
पराजित पुण्य प्रवीण प्रकाम पाप का प्रबल छा रहा कोप।
आर्य संस्कृति की नौका जीर्ण शीर्ण हो डूब चली मझधार,
पधारे पर उपकार पुनीत प्रेम की लेकर तुम पतवार ॥३

शैव या वैष्णव मत का यहां चल पड़ा कलुषित अन्तर्द्वन्द्व,
संघठन दीपक की जय ज्योति हो गई तत्क्षण अतिशय मन्द।
परस्पर द्वेष, घृणा, अपमान, अनय के भरने लगे विचार,
एकता का स्वर्णिम सन्देश सुनाया तुमने वारम्वार ॥४

किसी ने कर डाले दो टूक चाँद के लोग हुए हैरान,
फरिश्ते लिए खुदा का तख्त खड़े थे वर्षों से सच मान—

पकड़ कर डाला मुख में सूर्य यहां बजरंगी बिना विचार,
उठाकर लाये पर्वत शीघ्र दिया नैहले पर दहला मार ॥५

दिया यों आर्य जाति को तेज, शक्ति, नवसाहस का शुचिस्रोत,
हीनता भगने लगी तुरन्त हुई यों प्रभुता ओतःप्रोत।
पिलाकर अमृत धार विचार किया नवजीवन का संचार,
रखेंगे युग-युग तक हम याद कवीश्वर, तेरा यह उपकार ॥६

अलौकिक लीलाओं के धाम राम के गुण-गौरव का गान,
बना वह पीड़ित शोषित प्रचुर पराजित जनता का वरदान।
हुए जब झंकृत सूझ समेत सफल हृत्तन्त्री के मधुतार,
विजय की लिए भावना भव्य हो गया शक्ति राम अवतार ॥७

तुम्हारा सुन्दर सफल सुरम्य बरद वैशिष्ट्य पूर्ण साहित्य,
निराशा नील निशा के लिए उदित है, मानो नित आदित्य।
लोक प्रियता के पूर्णविराम छा रही कीर्त्ति सुरभिसंसार,
भक्त हे तुलसीदास ललाम नमन है तुमको बारम्बार ॥८

: ६ :

द्वापर सेनानी

धन्य देवकी के विराट्-सुत, द्वापर युग के सेनानी,
धन्य-धन्य स्वातन्त्र्य सूर्य हे, मानवता के अभिमानी ॥१

तुम उतरे जगती पर जन का जीवन भार हटाने को,
अनय ओघ या दैत्य शक्ति का दुर्गमदुर्ग मिटाने को।
लिए पूर्ण पुरुषार्थ प्रवलता दृढ़ता बल की पवमानी ॥२

कर्म योग की प्यारे तुमने बंशी मधुर बजाई थी,
सोयी मानवता तुमने ही आकर यहाँ जगाई थी।
कंस दलन से शक्ति योजना युग ने सत्वर पहिचानी ॥३

तुमने निश्छल निडर नीति को जीवन भर था प्यार किया,
अधिकारों के लिए सदा ही सबल क्राँति आधार लिया।
बता रही कर्त्तव्य पार्थ को गरिमा मय गीता-वाणी ॥४

भले हिमालय झुक सकता था किन्तु न झुकना सीखे तुम,
रवि मण्डल भी रूक लेता पर, किन्तु न रूकना सीखे तुम।
सदा योग-मुद्रा की चोरी बनी रही विजया रानी ॥

जीवन चक्र सुदर्शन पावन प्रगति प्रेरणा दे हमको,
करें राष्ट्र निर्माण अभय हो अमर एषणा दे हमको।
आलोकित आदर्श तुम्हारा, धरणी तल को वरदानी ॥६

धन्य विरजानन्द

धन्य मुनि दण्डिन् विरजानन्द गुणों के गौरवमय आगार।
तपोधन स्वामी विरजानन्द नमन है, तुमको बारम्बार ॥१
प्रथित प्रिय पावन पौरुष ने प्रशंसा पूरी पाई है,
धरा के कोने-कोने में गूंजती शुचि शहनाई है।
पुरातन प्रतिभा सागर का नहीं था कुछ भी वारापार ॥२
जानते सब ही ज्ञानी हैं कि तुम थे भौतिक नेत्र-विहीन,
साधना श्रद्धा में निष्णात ईश में तुम थे अन्तर्लीन।
तुम्हारे सूक्ष्म निरीक्षण पर वारते पण्डित नेत्र हजार ॥३
योग का पा सुन्दर संयोग बने तुम योगीराज महान्,
जय श्री शास्त्रार्थों में चरण चूमती जाने सकल जहान।
विपक्षी पहिन हार का हार आपको देते जय उपहार ॥४
निगम-आगम के सुन्दर सेतु आर्ष महिमा के मञ्जुमराल,
कर्म कौशल के कल-केतु तर्क के हिमगिरि उच्च विशाल।
व्याकरण विद्या के भास्वान् मानता तुमको सब संसार ॥५
निरत निष्काम निरीह नवीन नियति के निर्माता निर्भीक,
सुकृति शोभा के सरस्तोद्यान धैर्य के ध्रुवतर परमप्रतीक।
प्रतिष्ठा पूजा के अभिषेक भव्य भावों के भव-भंडार ॥६
सुधि संस्कृति के धर्मधुरिण ज्ञान का निर्झर ले आये,
पान कर निर्मल अमृत वारि जनों के मानस लहराये।
आर्य संस्कृति के गौरव गेय कौन है, तुम सा उच्च उदार ॥७
तुम्हीं से पाकर ज्ञान महान् दयानन्द वेदी के विद्वान्,
धरा को देकर जीवन दान हो गये वेदी पर बलिदान।
गूंजता नभ में नित्य नवीन जयति जय ज य जय जयकार ॥८

: ८ :

युग-निर्माता : दयानन्द

युग निर्माता पुण्य प्रदाता तुमने युग निर्माण किया।
दिव्य दिवाली दीप दिवस पर तुमने मुक्ति प्रयाण किया ।।

तुम ही धवल धरा पर लाये वेदों की फिर शहनाई,
साम स्वरों में शुभ्र ज्ञान की ज्योतिर्मय गरिमा गाई।
तुमने ही म्रियमाण जाति का सचमुच ही परित्राण किया ।।१

तुमने निज सत्संग ज्योति से शतशः दीप जलाये थे,
गुरुदत्त गुरु ज्ञान-मान से मुनिवर ही कहलाये थे।
दूर हुई नास्तिकता सारी आस्तिकता-आधान किया ।।२

सुप्त पड़ी सदियों से सोई रम्य ऋचाएं जाग उठीं,
वैज्ञानिक माधुर्य भाव को सुधी मनों में पाग उठीं।
सावधान हो सभी जनों ने वेदों का सम्मान किया ।।३

फिर से वैदिक संस्कृति की थी केशर क्यारी लहराई,
विश्व बंधुता रंग-रंगीली थी जगति में छवि छाई।
धर्म-धरा पर लगा नाचने मिथ्या को म्रियमाण किया ।।४

सत्य अर्थ की देख प्रक्रिया वैज्ञानिक पहिचान गये,
वैदेशिक विद्वान वेद की मान्य महत्ता मान गये।
तुमने जो अपनी प्रतिभा का स्वाभिमान आह्वान किया ।।५

देख तर्क का पौरुष प्राञ्जल 'मत' ने घुटने टेक दिए,
रूढिवादिता के पट पहिने मति ने सब थे फेंक दिए।
वरद विवेक जगा नागर में सागर सम कल्याण किया ।।६

शास्त्रार्थ समरांगण के तुम अद्भुत वन्द्य विजेता थे,
अतुलित अध्येता चेता थे जगति के नव नेता थे।
तुमने ही वर वेद-मार्ग पर चलने का व्याख्यान किया ।।७

'संस्कार विधि' ने संस्कृति की जीवन-फसल उगा दी थी,
'भाष्य भूमिका' ने भूतल में हलचल नयी जगा दी थी।
सत्य अर्थ के प्रिय प्रकाशन ने वैचारिक उत्थान किया ॥८
अमर तुम्हारी गौरव-गाथा, अमर तुम्हारा गायन है,
अमर हुआ निर्वाण तुम्हारा श्रद्धा अमर उपायन है।
अमर 'प्रणव' की कविता ने भी यश-नद में स्नान किया ॥९
: ९ :

महारानी लक्ष्मी

ब्रह्मावर्त भूमि सुरपूजित धन्य धाम अभिराम विठूर।
'मनुबाई' का रूप धरकर उतरी महाशक्ति भरपूर॥
'नाना' के सङ्ग जिसने रहकर किया युद्ध का था अभ्यास।
जिसे जानती जगति सारी और जानता है इतिहास॥
महाराज थे झाँसी के जो श्रीयुत् गंगाधर जी राव।
वनी उन्हीं की लक्ष्मी रानी मिला शौर्य को जैसे चाव॥
कालान्तर में प्राप्त पुत्र का दुःखदायक था हुआ वियोग।
महाराज भी हुए दिवंगत था विचित्र दुर्भाग्य प्रयोग॥
विपद्-वज्र यों गिरा अचानक किन्तु न रानी हुई हताश।
शासत्र-सूत्र सम्भाला सत्वर प्रजाजनों की पूरी आश॥
राज-कोष, नय, न्याय, नीति या सेना के भी जो थे काम।
स्वयं विभागों का करती थी नित्य निरीक्षण आठों याम॥
देख योग्यता प्रभुता पटुता अंग्रजों में कटुता ज्वाल।
उठी, मिलाया झांसी को भी ब्रिटिश राज्य में ही तत्काल॥
सह न सकी वह भीम-भुजंगी अंग्रेजों का पाद-प्रहार।
क्षुब्ध शुद्ध संक्रुद्ध हृदय से करने लगी युद्ध-फुसकार॥

भड़क उठा था तभी देश में सन् सत्तावन का विद्रोह।
जिसमें छोड़ दिया वीरों ने प्राण-प्रतिष्ठा का भी मोह ।।

मारामार मचाई ऐसी अंग्रेजों में था कुहराम।
झांसी में भी छिड़ा हुआ था अंग्रेजों से वह संग्राम ।।

अंग्रेजी सेना ने आकर घेर लिया था दुर्ग अजेय।
झाँसी की रानी को मारो या पकड़ो, था ये ही ध्येय ।।

डटकर युद्ध किया रानी ने, हो घोड़े की पीठ सवार।
बिना युद्ध के गया न कोई कमरा, कोट, दुर्ग का द्वार ।।

बाँध कमर पर 'दामोदर' को दांतों में ले अश्व लगाम।
दोनों हाथों से करती थी वह वैरी का काम तमाम ।।

घूम रहीं तलवारें दोनों जिनका जौहर लिखा न जाय।
वैरी घन-मण्डल में जैसे चपला चमक चमू में जाय ।।

'बिजली कड़क' उगलती गोले आग भरे वह भारी तोप।
जिसे 'गौसखों' दाग रहा था सेनापति कर भारी कोप ।।

दुर्ग-दिवारें रगी रक्त से लाशों के अगणित अम्बार।
छक्के छूट गये गोरों के मचा सैन्य में हाहाकार ।।

किन्तु बिगाड़ा द्रोही ने बस बना-बनाया सारा खेल।
भेद बताया दुर्ग-विजय का गौरव की मुरझाई बेल ।।

झाँसी ही उसने क्या त्यागी, त्याग दिये थे प्यारे प्राण।
किन्तु आन, सम्मान, शान पर चढ़ी रही थी दूनी शाण ।।

खूब लड़ी मरदानी रानी भूमण्डल में जय-जयकार।
इतिहासों के पृष्ठ कर रहे 'प्रणव' वन्दना बारम्बार ।।

वीर-आत्मजा, वीर-भामिनी धीरा वीरा वीर-प्रतीक।
अमिट रहेगी युग-युगान्त तक तेरी यश पद्धति की लीक ।।

: १० :

पंजाबकेसरी लाला लाजपतराय

ओ भारत के लाल, लाजपत, ओ भारत के दीवाने ।
क्रान्ति-कला-शृङ्गार शेर तुम अङ्गारों में दहकाने ।
आये थे तुम निज जीवन में जन-जीवन में सार लिए,
पीड़ित का परित्राण, विवेचन वाणी में उद्धार लिए ।
भावों का भंडार, हृदय में भारत मां का प्यार लिए,
मचल गये मतिमान् मनस्वी गोरोङ्गों को दहलाने ॥१

गूंज गया भारत का प्राङ्गण नरसिंह की हुङ्कारों से,
सिंहासन लन्दन का कांपा तेरी ही ललकारों से ।
प्रतिध्वनियां सुन रहा विश्व था दुर्ग मांडले द्वारों से,
देवदूत आया है, निर्भय जय ध्वजा को फहराने ॥२

भारत माँ की शान बने तुम आर्यों के अभिमान बने,
अरियों के अरमान जयी तुम वीरों के वरदान बने ।
वलिवेदी के वरद विवेकी वन्दनीय बलिदान बने,
भारतीय संस्कृति के भूषण वीरों की जय-जय गाने ॥३

तुम जैसों की पुण्य-प्रभा से पूजनीय हे, यह दिन आया,
रही न इस उद्यान धरा में गोरों की काली छाया ।
किन्तु रंग में भग हो गया गरल अमृत में धुलवाया,
सिन्धु देश पंजाव बङ्ग के बाग वने हैं वीराने ॥४

आज तुम्हारा गौरव है, पर आज तुम्हारा ठौर कहाँ,
यदि धड़ पर शिर नहीं तो फिर शोभित शिर और कहां ।
कहां तुम्हारी रावी, झेलम और कहो लाहौर कहाँ,
फूट गये सौभाग्य-सुघट गुरुदत्त भवन के युग जाने ॥५

इस स्वातन्त्र्य विहान दिवस में सत्य सरोज न खिल पाते,
चले न शीतल मन्द सुगन्ध पवन मलयाचल मनभाते ।
विपुल वेदना आतप से ये भाव सुमन भी मुरझाते,
अर्पित क्या कर सके 'प्रणव' कवि आपुन अपना पहिचाने ॥६

मुनिवर्य पं० गुरूदत्त

पण्डित श्री गुरूदत्त जी गौरव के आगार,
ज्ञानी, ध्यानी, पूज्य थे विद्या के अवतार,

विद्या के अवतार प्रभा प्रतिभा के स्वामी,
विद्वद्वृन्द वरेण्य बड़े ही नामी ग्रामी।

आलोकित शुचि शास्त्र रत्न से सदा सुपण्डित।
जगति में विख्यात सुशोभित श्रुतिधर पण्डित ।।१

सत्यान्वेषण यज्ञ के होता अनुपम भक्त,
तत्वज्ञान विधान में तुम रहते आसक्त,

तुम रहते आसक्त लक्ष्य था मोक्ष मनोहर,
धर्म-धारणा धैर्य्यं धरा में रही धरोहर।

करते सूक्ष्म विवेक एक प्रभु प्रणव-गवेषण।
सफल हुआ शुभ याग तुम्हारा सत्यान्वेषण ।।२

राका जो अज्ञान की तत्क्षण भागी दूर,
देव दयानन्द निधन की किरण पड़ी भरपूर,

किरण पड़ी भरपूर हो गया सत्य उजाला,
आस्तिकता जाग उठी पान कर अमृत प्याला,

लहरी भू में जीवन की शुचि उच्च पताका।
वैदिक धर्म-प्रचार भाव से भागी राका ।।३

जीवन भर ऋषिराज का पथ-निर्देशन मान,
वैदिक धर्म प्रचार में लगे रहे मतिमान,

लगे रहे मतिमान् देव ऋण सत्य चुकाया,
निशदिन घोर परिश्रम से थी दुर्बल काया,
औषध कोई दे न सकी प्यारी संजीवन।
रस-लोचन [illegible] की वर्ष आयु में बीता जीवन ॥४

याद तुम्हारी विश्व को सदा रहेगी याद,
ज्ञानी ज्ञान-प्रसार से हो पावन-प्रासाद,
हो पावन प्रासाद सुमन श्रद्धा के प्यारे,
बरसावेंगे आर्य सदा जो भक्त तुम्हारे,
नमन हमारा और भावना अति ही प्यारी।
अर्पित होगी जब आवेगी याद तुम्हारी ॥५

: १२ :

[illegible]—२६

शहीद पं० लेखराम

धन्य जनक, जननी उनकी थी, धन्य वंश वह विप्रमहान्,
धन्य घड़ी, नक्षत्र, योग, तिथि धन्य-धन्य था वह दिनमान।
धन्य धरा का धवल क्षेत्र वह विश्व विदित सैयदपुर ग्राम,
जहां वीर वर पण्डित प्रकटे लेखराम से धीर ललाम ॥१

शैशव में ही सुमति शुभा ने धार लिया था अपने अङ्क,
और युवावस्था ने जिनको बना दिया पूरा निःशङ्क।
राजकीय सेवा को छोड़ा, पाकर आर्यों का सत्सङ्ग,
करने को ही स्थान मिली थी ऋषि जीवन की गरिमा गङ्ग ॥

करने लगे निरन्तर श्रम से संध्या, यज्ञ, नियम ध्रुवधार,
वेद शास्त्र, स्वाध्याय बनाया प्रवचन को जीवन का सार।
उतरे कर्म क्षेत्र में निर्भय वर्म पहिन ईश्वर-विश्वास,
खंडन खड्ग लिए निजकर में मिथ्या मत का करें विश्वास ॥३

मण्डन वैदिक सिद्धांतों का तर्क तुला पर देते तोल,
व्याख्यान की अद्‌भुत शैली हृदयग्राहिणी थी अनमोल।
धाम-धाम में धूम मची थी हुए प्रकम्पित मत अविराम,
पोप, पादरी, जैन, ईसाई, बौद्ध, पारसी या इस्लाम ॥४

प्रबल युक्तियाँ प्रखर प्रमाणों की देते थे ऐसी मार,
घुटने टेक विपक्षी जाते करते जाते जय जयकार।
कादियान के मिर्जा जो ने ले अपने फिरके की ओट,
कहा 'खुदा का पैगम्बर मैं आया हूं' डङ्के की चोट ॥५

कर प्रहार शास्त्रार्थ शास्त्र का फोड़ा ढोंग ढके का ढोल,
चमत्कार सब मिथ्या करके खोल दिखाई सारी पोल।
अहमदिया सम्प्रदाय जाल की चली गई शतरंजी चाल।
मात खा गये मिर्जा जी थे और हुआ था बुरा हवाल ॥६

कपटी क्रूर कुचाली जन ने किया छुरे का कठिन प्रहार,
धर्म सदा ही विजयी होता और मतों की होती हार।
आर्य मुसाफिर लेखराम का वन्दनीय वीरो, वलिदान
देता रहे निरन्तर युग-युग आर्य जाति को जीवन दान ॥७

: १३ :

अमर शहीद श्रद्धानन्द

जय भारत के वीर भक्त हे, आर्य धर्म के वलिदानी।
जय जय मातृभूमि के प्यारे जय स्वदेश के अभिमानी ।।

जीवन घन में चमक उठी सौभाग्य तडित् की रूचि रेखा।
हुई प्रफुल्लित कर्म फलों की रस-धारा सी ध्रुव लेखा ।।

माणिक सी आभा ले आयी जगती ने कौतुक देखा।
दयानन्द की दिव्य दया से पावनता थी प्रकटानी ।।

पट-परिवर्तन हुआ कि ऐसा तम सा का साम्राज्य हटा।
ज्ञान-भानु की किरणों का फिर खुलकर अविचल लेख हटा ।।

सागर के तल से था मानों शुभ्र हिमालय ही प्रकटा।
व्रतनिष्ठा, तप, त्याग योग की महिमा सबने पहिचानी ।।

चमत्कार ही हुआ शकल लोहे का पारस छू पाया।
चमक-दमक परिपूर्ण की मति कुन्दन ही बनकर आया ।।

आर्य धरा ने बड़े प्यार से व्रतवीर को अपनाया।
कीर्ति किन्नरी मंगल गाती मन ही मन में मुसकानी ।।

कार्य क्षेत्र में डटा आर्यवीरों का प्यारा नेता जो।
ज्ञानी, ध्यानी, ऋषि-अनुगामी संस्कृति का नचिकेता जो ।।

जीवन के संघर्ष मंच का घोर जयी अभिनेता जो।
पद-पद पर विघ्नों के भय से हार नहीं जिसने मानी ।।

सदियों से बिछुड़े अपनों को फिर से तुमने अपनाया।
शुद्धि साम्य संगीत सुधामय सरगम को तुमने गाया ।।

मधुर मिलन का पर्व पुरातन जगती में फिर मनवाया।
'विश्वामर्यं कृण्वन्तः' की गूंज दी शुचि श्रुति वाणी ॥

गुरुकुल गंगाधार धरा में तुम उतार कर ले आये।
पुराचीन शिक्षा के दीपक मन-मन्दिर में जलवाये ॥

शतशः स्नातक शुद्ध पूत हो अवनी तल में जा छाये।
वैदिक संस्कृति की गुरू गरिमा आज सभी ने पहिचानी ॥

मातृभूमि पारतन्त्र्य-पाश में तुमने आग लगायी थी।
अमृतसर ने सुनी तुम्हारी राष्ट्र-भाव शहनाई थी ॥

वीर जवाहर श्री गाँधी ने गौरव गाथा गाई थी।
गोरी सङ्गीनों में तुमने रंगीली छाती तानी थी ॥

हिन्दु-मुस्लिम ऐक्य भाव के उपदेशों का सार सभी।
किया समर्पित राष्ट्र जनों को मान रहे आभार सभी ॥

साक्षी जामा मस्जिद का है, खड़ा हुआ मिम्बार अभी।
दिल्ली गगनांगण में गूंजी जो शब्दों की स्वर रानी ॥

श्रद्धामय आनन्द भवन के धन्य बने थे तुम राही।
बलिदानी बेला में मुनिवर मुक्ति एक निधि अवगाही ॥

श्रद्धांजलि स्वीकार करो हे, वन्दनीय तुम मन चाही।
'प्रणव' काव्य की कड़ियाँ करती रहें युगों तक अगवानी ॥

: १४ :

दिव्य दर्शनानन्द

'दर्शन' का आनन्द सदा ही जिनको भाया,
मोह-जाल में बांध सकी नहीं ममता माया।
वीतराग उपकार-प्रथा के अति अनुरागी,
सांसारिक सुख, स्नेह-सूत्र के अविचल त्यागी ॥

मन में उच्च उदार भावना ज्योति जगाई,
सम्पत्ति सब निष्काम काम में स्वयं लुटाई।
सदा शारदा शोभा के ही साज सजाये,
लक्ष्मी के वरदान आपने सब ठुकराये ॥

'प्रणव' पिता के सत्य सदा अनुपम विश्वासी,
झञ्झाओं में झुके न हिमगिरि के उपमा सी।
वन्दनीय है, मान्य सदा अलमस्त फकीरी,
जिसे सुनाती है, जगति की कीर्ति नफीरी ॥

तर्क शिरोमणि तर्क तीर थे प्रखर नुकीले,
जिनसे मल्ल-भुजंग मतों के तत्क्षण कीले।
वैदिक वर सिद्धांत सुधा में स्वयं नहायें,
अगणित पावन किए भक्त जन जो भी आयें ॥

गुरुकुल शिक्षा में भी तुमने क्रान्ति जगाई,
बिना शुल्क ही शिक्षा उत्तम रीति बताई।
आर्ष प्रणाली, देव गिरा को उत्तम माना,
विद्या बुद्धि वितान देश में सुखकर ताना ॥

षट्शास्त्रों के सूत्रधार अध्यात्म प्रयोगी,
कर्म प्रतिष्ठा, भोगवाद के अविचल भोगी।
प्रवर वाग्मी भारतीय संस्कृति के नेता,
शास्त्रार्थों के समर क्षेत्र के अमर विजेता ॥

उच्च हुई है, गगनाङ्गण में कीर्ति पताका,
भाग रही भयभीत मतों की घनतर राका।
'जगरांमा' के सन्त अमर हों नामी ग्रामी,
दिव्य दर्शनानन्द हमारे प्यारे स्वामी ॥

महात्मा हंसराज

आर्य जाति के गौरव गिरिवर आर्य जगत के सेनानी,
वन्दन है, शतवार तुम्हारा वैदिक संस्कृति अभिमानी ।।

प्रथित प्रेम प्रिय पावनता की प्रतिमा के थे तुम प्रतिमा,
मौन मुनि मतिमान् मनोहर मानवता की मधु महिमा ।
सत्य सिन्धु में तरणि-तरण की तुमने ठान यहां ठानी ।।

शिक्षा के शुचि दीप जलाये डाल स्नेह की ध्रुव धारा,
निविड़ तमिस्रा भगी त्रस्त्र हो छाया चहुंदिशि उजियारा।
निज कर्त्तव्य प्रथा-पथ सूझा मुदित हो रहे मन ज्ञानी ।।

तुमने त्याग सुधा के गुरुवर घट के घट थे भर डाले,
पी पी पावन हुए मनस्वी मधुरिम मुदिता के प्याले ।
जय-जयकार हुआ अवनी में प्रगति प्रेरणा पहिचानी ।।

वन्द्य, आर्य संस्कृति-वीणा के तुम थे गायक नर-नायक,
जीवन का व्यवहार सुजन को मन मोहक था सुखदायक।
कौन नहीं मानेगा तुमको उपकारों का वरदानी ।।

एक लगन थी एक चाह थी, एक भावना विस्तारी,
दयानन्द के दिव्य विचारों की फूले बस फुलवारी ।
सोई शक्ति जगे आर्यों की विश्व करे फिर अगवानी ।।

मानस-सर के राजहंस तुम मुक्ता मुक्ति लुटाते थे,
इसीलिए हंसों में मुनिवर हंसराज कहलाते थे ।
युग युगान्त तक अमर रहेगी युग जयवाणी कल्याणी ।।

: १६ :

वीर बिस्मिल

धन्य क्रांति के अग्रदूत हे, धन्य वीर बलिदानी रे।
धन्य धन्य बिस्मिल लासानी तुम दधिचि से दानी रे ।।

जन्म भूमि पर देख वेदना गोरे अत्याचारों की,
ढली हृदय के सांचे में फौलाद अगम्य विचारों की।
सेना सी सज रही प्रतिक्षण स्वाभिमान उद्गारों की,
कर्म क्षेत्र में लहराई गंगा सी पूत जवानी रे ।।

तुम निर्भय, निर्द्वन्द्व, निडर नव नाटक के अभिनेता थे,
तुम संयम के धनी आर्य अभिमानी मानी चेता थे।
तुम थे शौर्य सूर्य के मण्डल अरि-दल बल के जेता थे,
रहा यूनियन जैक कांपता तेरी सुन-सुन वाणी रे ।।

पी अशफाक तुम्हारा निश्छल मिलन माधुरी मधु प्याला,
देश भक्ति-अनुरक्त रङ्ग में रङ्गा वीर वर मतवाला।
हिन्दु-मुस्लिम प्रश्नावालि की सुन्दर सी उत्तर माला,
महामुक्ति की युक्ति देश ने मानी सच पहिचानी रे ।।

तुम थे राम प्रसाद यही जीवन में तुमने पाया,
कहो हिमालय ने कब-कब किसको है शीश झुकाया।
यही धर्म की मर्म आततायी को जाय मिटाया,
मनु की पावन-पुण्य धरोहर तुमने जानी मानी रे ।।

हे नरसिंह सफल की तुमने माँ की अमृतधारा,
देकर वर बलिदान देश को दिया मुक्ति का नारा।
कितनी पावन हुई कि उस दिन गोरखपुर की कारा,
वीर शृंखला में रहती हैं कड़ियाँ नई पुरानी रे ।।

: १७ :

शहीद अशफाक उल्ला

वतन पर लुटायी कि जिसने जवानी,
कहो क्यों न उसकी सुनायें कहानी।
विरासत में जिसको मिली वीरता थी,
निडरता साथ सदा ध्रुव धीरता थी।

रहा जो सदा ही कि हिम्मत का हामी
न भायी कभी थी कि जिसको गुलामी।
सदा वीर करते रहें आगवानी ॥१

हुआ नाम जिसका कि अशफाक उल्ला,
नहीं मौलवी था न हाफ़िज न मुल्ला।

मगर एक इन्सान रोशन सितारा,
अपने चमन का था जो गुल हजारा।
न खुशबू अभी तक है जिसकी भुलानी ॥२

बड़ा नेक मुस्लिम था हिन्दु-हिमाती,
बना जो कि बिस्मिल का सच्चा संगाती।

अजव जिन्दगी थी अजब था करीना,
कि खाके वतन को था समझे मदीना।
नमाजें थी जिसकी सदा सावधानी ॥३

रहा राम का दाहिना हाथ प्यारा,
दिखाता रहा जो तरी को किनारा।

चढ़ा दार पर मुसकराता गया जो,
शहादत का डंका बजाता गया जो।
अमिट आज जिसकी हुई है निशानी ॥४

१८ :

शहीदों के प्रति

भारत माँ वीर शहीदो ! तुमको बारम्बार प्रणाम,
राजगुरू सुखदेव भगतसिंह तुमको बारम्बार प्रणाम।

जीवन गंगा रही तरङ्गित अद्‌भुत लिए रवानी थी,
भानु-किरण सी आभा उज्ज्वल जगति को पवमानी थी।
भूकम्पी सन्देश सुनाती ज्वालामुखी जवानी थी,
अरि दल का संहार एक ही नेक रहा था केवल काम ॥

वरदानों का नहीं चाव था बलिदानों के हामी थे,
संयम नियम समाधि व्रतोवर धैर्य्यधनों के स्वामी थे।
अमित कोष सन्तोष सहिष्णुता सत्पथ के अनुगामी थे,
स्वार्थ एषणा त्याग याग था उपकारों का रचा ललाम ॥

प्राणाहुति देने को तत्पर कभी न करते शंका थे,
महावीर बन अंग्रेजों की रहे फूंकते लंका थे।
नर वङ्का नरसिंह जीत का रहे बजाते डङ्का थे,
मातृ भूमि स्वातन्त्र्य सुधा की चिंता थी बस आठों याम ॥३

रणपोतों को दिशा-प्रबोधक तुम उज्ज्वल ध्रुव तारे से,
दबे नहीं गौराङ्ग असुर से सत्य अंश प्रिय पारे से।
नहीं पूर्णिमा चाँद वैरि को द्वितीया तेज दुधारे से,
नहीं जानते कब होती थी जीवन में प्रातः या शाम ॥४

आकर्षण दे सके न कोई निज सम्पर्क झमेले थे,
जान हथेली पर रख चलते बलिदानी अलबेले थे।
सदा जुड़ेंगे वीर-चिता पर धूमधाम से मेले ये,
मानस-मन्दिर में विराजते देव हमारे ये निष्काम ॥५

वीरों के बलिदान जागरण लाते पुण्य प्रभाती हैं,
भारत के उद्यान अङ्क में वृक्ष लता हरियाती है।
'प्रणव' रसालों की डालों पर कीर्ति-कोकिला गाती है,
जहाँ कहीं हों सबको पहुंचे सबका लाखों लाख प्रणाम ॥६

सन्त सर्वदानन्द

निराला एक योगी था निराला सन्त प्यारा था।
निराला एक जीवन था निराला वह हमारा था।।

निराली प्रखर प्रतिभा थी निराली ज्ञान-गरिमा थी,
निराली शांति सुषमा थी निराली मंजु महिमा थी।
निराला एक वह ऐसा अनेकों का सहारा था।।१

कमंडल दण्ड कर, कौपीन कला सा सबल कम्बल,
यही थे मुक्ति राही के अनोखे राह के सम्बल।
सरस स्वच्छन्द ईश्वर भक्ति का नव निर्झर उतारा था।।२

जहाँ पर कलित कालिन्दी सतत कलनाद करती है,
जहाँ आश्रम प्रणाली की मधुर धारा विचरती है।
त्रिवेणी तुल्य तट पर ही सुजन संगम भी प्यारा था।।३

वहाँ के सलिल-संगम न चाहे एक तर पाये,
यहाँ के साधु-संगम में अनेकों धीर तर पाये।
यहां 'सन्मार्ग दर्शन' में 'प्रणव' परिचय विचारा था।।४

मनीषी धर्म यश पालक धवल धुर-इन्द्र को धारे,
गुंजाते ज्ञान जिज्ञासु 'प्रणव' सन्देश शिव सारे।
विश्वबन्धुत्व वीणा का सजाया साज सारा था।।५

तपोधन, राग-द्वेषों से पृथक् स्वर श्रेय का साधक,
सुधाकर ब्रह्म विद्या का विवेकी वन्द्य नर नायक।
सभी का सर्वदा आनन्द ही ध्रुव ध्येय धारा था।।६

: २० :

महात्मा नारायण स्वामी

महात्मन् नारायण अभिमान्य पूज्यवर प्रतिभा के अवतार।
आर्यवर, स्वामिन् सुकृति निधान, नमन है तुमको बारम्बार ॥१

तुम्हारा चिन्तन चारू चिरत्न रत्न सी आभा देता था,
तुम्हारा पावन वरद विवेक एक बस सबका नेता था,
उसी का पाकर बस अवलम्ब सफलता लहराई साकार ॥२

सजग स्वाध्याय सुधी ने सदा अनोखे खेल खिलाये थे,
स्वयं ही शास्त्र रहस्यों ने मनन से मेल मिलाये थे।
अचानक मानो खोला था वेद ने स्वर्णिम शोभनद्वार ॥३

मुदित मन-मन्दिर में बैठी सलोनी शान्ति सहेली सी,
उपनिषत् स्वयं सुझाती थी अर्थ की पुण्य पहेली सी।
योग का था पूरा सहयोग 'प्रणव' का पाने को प्रिय प्यार ॥४

आत्मबल पौरुष का सम्मान प्राप्त कर नेता बने विशाल,
आर्य जनता में उठी उमङ्ग रङ्ग सी उन्नति की तत्काल।
खिले सब 'आर्य मित्र' अरविन्द प्राप्त कर ऊषा का उपहार ॥५

तुम्हारा पाकर आर्शीवाद कि गुरुकुल वृन्दावन सा धाम,
कल्प तरूवर सा लहराया विश्व में विश्रुत विशद ललाम।
त्रिवेणी त्रैतवाद परिपूर्ण वह रही ज्ञानामृत की धार ॥६

अमर है आत्म त्याग का रूप अमर है मुनिवर गौरव गीत,
अमर है वन्द्य विवेक अनूप अमर है कीर्तिकल्प नवनीत।
अमर हो जगती तल में सदा जयन्त तन्त्री की झनकार ॥

: २१ :

महामना मालवीय

स्वत्वसुध के स्रोत सतत सन्तों के प्यारे,
रम्य रश्मियाँ लिए ज्ञान की आप पधारे।
गीत भारती वीणा पर संस्कृति के गायें,
यज्ञ तपोधन जीवन के यजमान कहाये ॥१
श्रीचरणों में रही सदा बन दासी चेरी,
मन में त्याग प्रधान भावना रही घनेरी।
दम्भ द्वेष विद्रोह भाव की कहीं न छाया,
नत मस्तक क्यों विश्व न हो वे ब्रह्मा आया ॥२
मोक्ष मन्त्र की व्याख्या का आदर्श मनोहर,
हरता जन के क्लेश दया की दिव्य धरोहर।
नम्र नीति के विस्तारक सत्पथ अनुगामी,
मातृ भूमि के लाल अहिंसा व्रत के हामी ॥३
लगा विश्व विद्यालय तरुवर है लहराता,
बीता युग विज्ञान गान काशी में गाता।
यम-नियमों के सूर्य तपस्वी, देव, दधीची,
जीवन किरणें प्राप्त प्रकाशित प्राच्य प्रतीची ॥४
कीर्ति कौमुदी सदा कुमुदिनी मन विकसाती,
जगति✲ नोआखली की बस याद जगाती।
यती व्रती ब्रह्मर्षि मनीषी की यह महिमा,
होवे जागृति रूप जयन्ती गौरव-गरिमा ॥५

✲ नोआखाली हत्या काण्ड सुनकर ही दिवंगत हो गये थे।

नेताजी सुभाष बोस

हे नर पुङ्गव, न्याय शीलता, निर्भयता की तुम थे खान,
दृढ़ता और सुजनता संग में राजनीति के सूर्य समान।

वन्द्य तुम्हारा अनुपम जीवन दे हम सबको यह वरदान,
निडर नीति चातुर्य रीति से करें राष्ट्र का हम उत्थान ॥१

भरे हुए थे मन-मन्दिर में जो स्वराज्य का अनुपम कोष,
शशव से निर्द्वन्द्व निडर नित निज जीवन में थे निर्दोष।

वैदेशिक साम्राज्य-प्रथा के लिए विचारों में जो रोष,
वीर शिरोमणि भारत मां के धन्य सुभाषचन्द्र जी बोस ॥२

सागर सम गम्भीर उच्चता, दृढ़ता में अविकल नगराज,
सजग क्रांति की ज्वालमाला से ज्वालामुखी बने सरताज।

विपुल विघ्न घनघोर घमंडी कर न सके थे आभाम्लान,
राजनीति के गगनाङ्गण में मेधा रश्मि लिए भास्वान् ॥३

ब्रह्मचर्य व्रत अद्भुत अतुलित शौर्य प्रतिष्ठा के प्रिय प्राण,
अविचल वीर व्रती श्रद्धायुत असिधारा के स्रोत महान्।

दबा न सकतीं, झुका न सकतीं, डिगा न सकती थी जो जेल,
जूझे तुम स्वतन्त्र्य युद्ध में मानो खेल रहे थे खेल ॥४

विषयवासना या कि प्रलोभन खींच सके नहीं अपनी ओर,
उच्च उच्चतर चढ़ी नभस में कीर्ति पतङ्ग की थी डोर।

तुम लकीर के कभी किसी की बन न सके थे वीर फकीर,
तुमको आत्म सरोवर की ही भाती थी स्वच्छन्द समीर ।।५

अंग्रेजी साम्राज्य शलाका रख न सकी थीं तुमको बन्द,
नजर बन्द थे मुक्त हो चले तोड़ सभी सीमा प्रतिबन्ध ।

धर पठान का वेश, देश तज तुम पहुंचे काबुल-दर्म्यान,
अंग्रेजों के लगे गुप्तचर मन में बड़े हुए हैरान ।।६

इटली के सम्राट 'मुसोलिनी' से कर ली थी सब ही बात,
जाय मिलाया कुछ ही दिन में ज़र्मन हिटलर से हाथ ।

'फ्यूहरर आफ इण्डिया' पद पाकर जरमन से अनुपम सम्मान,
बङ्ग केसरी लग्न लगाये तत्क्षण पहुंचे थे जापान ।।७

रास बिहारी वोस वीर से देश-दशा पर किया विचार,
घोषित की आजाद हिन्द की नामो ग्रामी थी सरकार ।

'हिरोहितों' ने सौंप दिए थे भारत बन्दी वीर सपूत,
श्री सुभाष ने भरा उन्हीं में पौरुष भाव बने रणदूत ।।८

लड़े यहीं आजाद हिन्द की सेना के रणवीर जवान,
अंग्रेजी साम्राज्य हटाने किये निछावर अपने प्राण ।

सिंहापुर, रंगून, असम या अण्डमान या निकोबार,
मान गये तलवार तुम्हारी करते थे सब जय जयकार ।।९

मिला तुम्हीं को यह गौरव भी धवल धरातल में हे वीर,
जीवन-मरण तुम्हारे दोनों सन्देहों की बने लकीर ।

हे नर नायक वीर विनायक मातृभूमि के लाल ललाम,
हो कृतकृत्य चारु चरणों करता है यह राष्ट्र प्रणाम ।।१०

: २३ :

महात्मा गांधी

भारत मां की अमर ज्योति हे तुमको बारम्बार प्रणाम।
सत्य, अहिंसा के रक्षक तुमको बारम्बार प्रणाम॥
भारतीय स्वातन्त्र्य-यज्ञ का तुमने अग्न्याधान किया,
मृतक राष्ट्र को तुमने मुनिवर, सत्य प्राण का दान किया।
स्वतन्त्रता के पावन-प्रहरी तेरा काम सदा निष्काम॥१
तुम हिमगिरि से उच्च, शान्त सागर से उज्ज्वल मानी थे,
सत्य निष्ठ जन मन के ज्ञाता तुम तो जीवन दानी थे।
पाकर सब नेतृत्व तुम्हारा धन्य हो गये वीर निकाम॥२
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, पारसी, जैनी हो या ईसाई,
तुमने सब सुमनों की माला भारत माँ को पहिनाई।
प्रीति गङ्ग को निर्मल-निर्झर बहे निरन्तर आठों याम॥३
यह बलिदान तुम्हारा प्रतिदिन यही प्रेरणा देता है,
मानव की सेवा जो करता विजयी होता नेता है।
संसृति की वीणा में सरगम यही बजावे स्वर अविराम॥४
बापू जीवन दीप तुम्हारा नित्य दे रहा उजियारा,
सदा देश की सेवा में वीरों ने सब कुछ वारा।
पाकर शुभ आशीष तुम्हारा विजय वरेंगे कर अभिराम॥५

: २४ :

कमला नेहरू

आदर्शों की ज्योति धरा पर उतरी एक सुहानी थी।
जिसके त्याग तपस्या की बस केवल बनी कहानी थी॥
भारतीयता के सांचे में विधि ने जिसको ढाला था।
सत्य धर्म को निष्ठा ने ही मानो उसको पाला था॥१
शैशव में ममता सी माँ ने जिसको अङ्क खिलाया था।
ऐश्वर्यों की धाई ने भी जिसको दूध पिलाया था॥

कलित-किशोरी के जीवन में नूतन अनुभव आया था।
वैवाहिक नवकल्प वृक्ष जब लहर-लहर लहराया था।।२
कमला सी कमला घर आई बाज रही शहनाई थी।
सच मानो आनन्द-भवन में खुशियां अमित मनाई थी॥
पति पश्चिम का लाल जवाहर पत्नी भारत-आभा सी।
मधुर मिलन में एक हो गये चन्द्र चन्द्रिका-राका सी।।३
आनन्दों की रानी थी पर कभी न मन में इतराई।
अभिमानी मुद्रा में वाणी कभी न किञ्चित् इठलाई॥
प्रियतम की जो प्राण-प्रिया थी भावी जीवन की आशा।
सादा जीवन उच्च विचारों की सुन्दर सी परिभाषा।।४
पथ से विचलित कर न सकी थी जिसको जेलों की धमकी।
विघ्न घनों के घटा टोप से सदा दामिनी सी दमकी॥
पति के कार्य-कलापों में जो आर्य भावना सी छाई।
भारतीय स्वातन्त्र्य समर में अमर सङ्गिनी बन धाई॥५
पातिव्रत सङ्गम में स्नाता धर्म-शाटिका धारी थी।
अञ्जन शील सला नयनों में खञ्जन भी बलिहारी थी॥
कङ्कण कौशल कर्म मर्म के श्रुति श्रुति भूषण नीके थे।
सद्विचार सिन्दूर-बिन्दु से ब्राह्याडम्बर फीके थे॥६
जन सेवा के सुधा-स्रोत से ओतः प्रोत कहानी सी।
प्रीति रीति नवनीति बाँटने करुणा पूर्ण मथानी सी।
देशभक्ति के भाव जगाने वीरा शक्ति भवानी सी।
भारतीय संस्कृति को गाने आई वीणा पाणी सी॥७
जाते-जाते स्वर्ग सदन को मातृभूमि रखवारी को।
देती गई धरोहर पुत्री सत्य इन्दिरा प्यारी को॥
ऐसी देवी के गुण-गायन 'प्रणव' गुणी क्या गा पायें।
श्रद्धाञ्जलि जो दे न सकेंगी कोटि-कोटि भी कवितायें॥८

जय जवाहर

देश का प्यारा जवाहर क्यों अचानक खो गया है।
राजनीतिक रवि उजागर अस्त मानो हो गया है।।
लाल मोती की प्रभा ने जन्म से ही चमकाया,
माँ स्वरूपा अङ्क ने पा प्यार से जिसको झुलाया।
जो अलौकिक योग्यता के बीज मानो बो गया है ।।१
चूमती थीं चरण जिसके सिद्धियाँ बन चेरियाँ,
स्वत्व के सङ्घर्ष में जय थीं लगाती फेरियां।
ध्रुव धरातल के हृदय में भव्य भाव संजो गया है ।।२
विविध वज्र विपत्ति में भी जो कि अविचल ही रहा,
सतत संकट वृष्टि को भी नित्य अविकल ही रहा।
बोलता सा वह हिमालय मौन कैसे हो गया है ।।३
नव्य नीति नवेलियों ने था जिसे प्रियतम बनाया,
विश्व युद्ध विभिषका को क्षितिज से जिसने हटाया।
पंचशीलों का प्रणेता कालिमाएं धो गया है ।।४
आँधियों में गीत गांधी के मधुर गाता रहा,
जागरण से जन-जनार्दन जो कि उमगाता रहा।
प्रवर प्रहरी आज क्यों चिर नींद में ही सो गया है ।।५
१वर्ण रसनिधि चन्द्रमा की २रश्मि-लोचन सी मई,
राष्ट्र तरणी का प्रबल पतवार पल में ले गई।
मातृ भू का सृजन-दीपक मन्द सा कुछ हो गया है ।।६
शोक-संतप्ता न केवल 'विजय' 'कृष्णा' 'इन्दिरा' है,
बल्कि रोती सी तड़पती सी समस्त वसुन्धरा है।
बिन कहे ही शान्ति का शृंगार सुरपुर को गया है।।७

१. सन् १९६४, २. २७ मई।

: २६ :

सरोजिनी नायडू

मातृभूमि भारत की मानो भुजा पसारी,
विजय कामना केलि कला की क्यारी प्यारी।
जगती में विख्यात बंगभू गौरवशाली,
संस्कृत, संस्कृति, न्याय, नियति की प्रवर प्रणाली ॥१

उतरी अद्भुत ज्योति जया की शक्ति स्वरूपा,
वैभव भव्य विभूति नव्यमेधा अभिरूपा।
आँगल भाषा काव्य कला की अविरल धारा,
साहस सिन्धु समान धैर्य की दाम अपारा ॥२

राष्ट्रियता की रश्मि सरोजिनी स्वर्णिम श्रेणी,
थी विचित्र विज्ञान शारदा तत्व त्रिवेणी।
हुई विवाहित देव 'नायडू' डाक्टर पाकर,
पूर्व दिशा की किरण मिली दक्षिण से जाकर ॥ ३

गृहस्थ आश्रमगीत स्वरों की बजती वीणा,
स्नेह सुमति, आदर्श-सुशोभित पाक प्रवीणा।
भाव-वर्षिणी मधुर शुभा भाषण श्री शैली,
भारत-कोकिला-कीर्ति गीति अवनी में फैली ॥४

गान्धी-गुण गौरव की पाकर कृपा मनोहर,
खिली सरोजनी हुआ सुशोभित मान सरोवर।
भारत भू की सेवा में जो कष्ट उठाये,
कारागार कुचाल जाल शासन के छाये ॥५

मुक्त मीन सी निर्भय अविचल थी अलबेली,
रही तैरती तापों में सौजन्य सहेली।

भारत में स्वातन्त्र्य दिवस का भास्कर आया,
राज्यपाल❀ पद मिला कि जन मन गण हरषाया ॥६
चकित, थकित था जगत् देख परिवर्तन प्यारा,
नारी ने नर-नायक शासन-सूत्र सुधारा।
महामान्यता माल आज भी पोह रही,
याद तुम्हारी लक्ष मनों को मोह रही है ॥७

❀ उत्तर प्रदेश की राज्यपाल बनी।

: २७ :

श्रीधर पाठक

मानवता के धनी मातृभाषा के प्यारे,
नरवर नीति-विधान, रीति नक्षत्र उजारे।
नील निशा में काव्य कुमुद की आभा लाये,
यतीवर साधु समान साधना को अपनाये ॥१
पंथ पुरातन हिन्दी का पावन अपनाया,
डिगे न किञ्चित् मात्र "प्रकृति-वैभव"❀ को पाया।
तत्परता के लोक, साधन-स्यन्दन-नेता,
श्रीयुत सत्य सुजान सुभग संयम के चेता ॥२
धर्म धैर्य के धारक, पालक प्रण के स्वामी,
रवि सम का व्यालोक प्रकाशक नामी ग्रामी।
पाकर पुण्य प्रकाश प्रभा प्रतिभा मुसकाई
ठगने माया ममता से, प्रभु की प्रभुताई ॥३
कर्मवीर❀ का कर्म याग जब पूरा होता,
"काश्मीर सुषमा"❀ का उज्ज्वल बहता सोता
यत्न-रत्न की शोभा ने सौभाग्य जगाया,
शरत् सुभग "एकान्त"❀ कभी सङ्गीत सुनाया ॥

अखिल विश्व विख्यात हुई रचना 'वनवासी'※
मञ्जुल मुक्त विचार सभी को है, सुख राशि।
रञ्जन होता रहे लोक का काव्य सुधा में,
होवे श्रीधर-सुयश समुज्वल प्रिय वसुधा में ।।५

※ आपके द्वारा लिखित पांच रचनाएं

: २८ :

कवीन्द्र मेधाव्रताचार्य

मेधाव्रत, आचार्य महामहिमा के स्वामी,
काव्य कला के केतु, सेतु शुचिता के नामी।
कलित कल्पना कुञ्ज, मंजु मतिमान्, मनस्वी,
संयम श्रुति स्वाध्याय धनी है यती यशस्वी ।।१

"दिव्यानन्द"१ ललाम लोक 'लहरी' उद्गाता,
"दयानन्द दिग्विजय"२ वीणा के है निर्माता।
तुमने हमको सुकृत 'प्रकृति-सौन्दर्य'३ दिखाया,
तुमने गुरु गिरिराज ताज का गौरव गाया ।।२

कान्त 'कुमुदिनी चन्द्र'४ ज्योत्स्ना छटा निराली,
'ब्रह्मचर्य का शतक'५ सुधा की सुन्दर प्याली।
ग्रन्थ रत्न अनमोल धरा में प्रिय प्रकटाये,
शुचि सरस्वती मातृ-चरण उपहार चढ़ाये ।।३

शास्त्रीय संगीत सुरभि के मारुतमानी,
अनुपम सरल उदार कलानिधि से तुम दानी।
जन-मानस में कीर्त्तिलता ललिता सरसाती,
पुण्य पताका कर्म मर्म की है, लहराती ।।४

संस्कृत संस्कृति हुई शोकिता उन्मन मन से,

देख दिवंगत श्री कविन्द्र की सजल नयन से।
मौन भारती हुई, 'प्रणव' पद की अभिलाषा,
करो पूर्ण विश्राम मुक्ति की प्रिय परिभाषा ॥५

१. दयानन्द लहरी २. दयानन्द दिग्विजय ३. प्रकृति सौन्दर्य
४. कुमुदिनी चन्द्र ५. ब्रह्मचर्य शतकम्

: २९ :

राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद

धीर वीर गम्भीर प्रभाप्रतिभा के पालक,
राष्ट्र शकट के सुदृढ़ साहसी शुचि संचालक।
कर्मवीर फल कर्म मर्म के ज्ञाता नामी,
यम नियमों के धनी योग जीवन के हामी।
दर्शन कर जन जाति के मिटते सब अवसाद थे,
महामान्य महिमा महिम श्री राजेन्द्र प्रसाद थे ॥ १
श्री गांधी के गीत गुणों के गुरुतर गायक
दर्शन के मतिमान मनोहर विज्ञ विनायक।
भाषा सिन्धु अगाध रत्नमाला-निर्माता,
तोड़ चले क्यों 'देश रत्न' तुम यों ही नाता।
सत्य अहिंसा, प्रेम के प्रेरक पुण्य प्रतीक थे,
वर विचार दृढिमा लिए प्रिय पाषाणीलीक थे ।।२
जीवन में जन सेवा का ही नियम निभाया,
हिमगिरि से थे उच्च किन्तु अभिमान न भाया।
शान्ति सुधा के वर्षक हे घनश्याम निराले,
कीर्त्ति मैथिली के मनमोहक राम निराले।

संकट सागर लहर में तुम प्यारे पतवार थे,
नन्दनसम इस देश की चन्दन-वन्दनवार थे ॥३

हृदय उदारता उच्चगुणों ने अवसर पाया,
तुमको वन्द्य अजात शत्रु पद पर बिठलाया।

कौन जानता काल राहु की अद्भुत माया,
छा जावेगी रवि प्रसाद पर काली छाया।

हुआ अतर्कित आपका जो परलोक प्रमाण है,
जन-जन मन मृग वृन्द को वींध गया यह वाण है ॥४

हे भारत के प्रथम राष्ट्रपति रवि उजियारे,
अर्द्ध मार्ग में छोड़ राष्ट्र रथ स्वर्ग सिधारे।

ज्ञान केन्द्र थी स्वर्ग किरण वैधानिक माला,
युग-युगान्त तक दे धरणी को नव उजियाला।

विश्व वाटिका में रहे प्रसरित सुरभि ललाम है,
प्रिय स्वीकृत हो राष्ट्र का श्रद्धा युक्त प्रणाम है ॥५

: ३० :

स्वामी वेदानन्द

शत शत प्रणाम शत शत प्रणाम-हे वेद ज्योति के परम धाम,
हे जगद् वन्द्य स्वर्लोक नीति—ले ऋषि मुनियों की प्राच्य प्रीति।
रखते न हृदय में भाव भीति—हे व्रत विशिष्ट के वर विराम ॥१
तुम सहसा ही होकर विरक्त—संलग्न ईश अनुरक्ति भक्त।
इहलोक कीर्ति में अनासक्त—थे त्याग चुके धन धाम काम ॥२
निज सम्बन्धों का तारतम्य—था बिखरा तब हो जगद्गम्य।
केवल आकांक्षा यही रम्य—विस्तृत कुटुम्ब वसुधा ललाम ॥३
हो गई दूर भव भोग भुक्ति—जब मिली स्वयं ही योग मुक्ति।
थी निकट आ रही मंजु मुक्ति—आनन्द परम की दिव्य दाम ॥४

तन्मयता तन्त्री तार-तार—उदगीथ गीत की ध्वनि अपार।

करते थे गुञ्जित देह द्वार—स्वर सुखद शान्ति के अष्ट याम ॥५
श्रुति शास्त्र, सूत्र का ज्ञानपूर—करता था कल्मष कोटि दूर।
दुर्भाव दैत्य हो चूर-चूर—सद्भाव सृष्टि होती निकाम ॥६
उपदेशक❁ विद्यालय भवन केतु—स्वाध्याय सरित के शुभ्र सेतु।
औदार्य कार्य के सबल हेतु—संस्कृत भाषा के स्रोत साम ॥७
गैरिक वसनों का वरद वेश—था सर्वाहुति का दिव्य देश।
हे अग्नि रूप बुधवर विशेष—देते थे द्युति, मति, गति प्रकाम ॥८
तुम वरद वेद-आनन्द रूप—शास्त्रार्थ समर के जयी भूप।
व्याकरण वारि के अमर कूप—प्रभु 'प्रणव' नाम के धनी धाम ॥९

❁ उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य।

: ३१ :

महाकवि शंकर

युग युग तक स्वर्णिम याद जगे युग युग तक होवे अभिनन्दन,
युग युग तक गाये गीत धरा युग युग तक होवे यश गुंजन।
हिन्दी के पावन-प्राङ्गण में कविता का परिणय पूर्ण हुआ,
वर माल मिली श्री शंकर को कवियों का गौरव पूर्ण हुआ।
तब 'कविता कामिनी' कान्त बने ब्रज में थे जैसे ब्रजनंदन ॥१
शब्दों के अनुपम थे कुबेर प्रतिभा की पीकर मधु प्याली,
भावों के रत्न पिरो करके काव्यों की माला रच डाली।
साहित्य देव का करते थे तुम नितप्रति यों ही वर वन्दन ॥२
शब्दों की शक्ति प्रभंजन से छन्दों का सागर लहराया,
त्रैगुण्य गङ्ग का उद्‌गम ही पृथिवी पर मानो उमड़ाया।
ममता के मलयागिरि पर था आरोपित कवि तरु में चंदन ॥३

पा शंकर सूर्य मयूखों को कविता की कलियाँ खिलीं खिलीं,
गुण गान-तान के गाने को भृङ्गावलि भावुक हिली मिलीं।
मधुमास मनोरमा बिखर पड़ा पिक चातक का लेकर रंजन ॥४
१'अनुराग रत्न' की आभा ने रत्नों को मात करारी दी,
२'शंकर सरोज' की सौरभ ने कविता को मस्ती प्यारी दी।
है कवि की कविता धूप छाँह सुख-दुःख का नंदन है, कुन्दन ॥५
शुचि आर्य गीतिका के गायक तेरे मधुगान निराले थे,
जागृति की वीणा पर गाये नव रस में अतिशय ढाले थे।
शंकर से लेकर दाय भाग प्रकटे हरिशंकर❋ सुखनन्दन ॥६

कवि के ग्रन्थ—१. अनुराग रत्न २. शंकर सरोज,

❋ सुपुत्र- हरिशंकर

: ३२ :

महाशय कृष्ण

आर्य जाति की गुण गुंजित गाथा के गायक,
आर्य जाति के भूषण-पूषण वीर विनायक,
आर्य जाति की रीति नीति रथ के संचालक,
आर्य जाति के तिलक महाशय प्रण के पालक।
आर्य जाति भव-सिन्धु के तुम पतवार प्रवीण थे।
आर्य जाति इतिहास के एक पृष्ठ प्राचीन थे ॥१
तुम गान्धार प्रसिद्ध क्षेत्र के रवि उजियाले,
पत्रकारिता के प्रयाग में किरण पसारे।
अनय और अज्ञान निशा के पटल-विदारक,
प्रेरक पुण्य प्रकाश धारणा अटल विचारक
अमल कमल से नित्य ही अग्रलेख लिखते रहे।
भावुक जन अलिवृन्द से आनन्दी मिलते रहे ॥२

साहस का शुचि स्रोत हृदय में था उमड़ाया,
पत्थर सा २'उसमानी' दिल तुमने दहलाया,
३भाग्यनगर का भाग्य कभी था सुप्त जगाया,
आर्य जाति जय केतु गगन में था लहराया,
तुम सत्याग्रह वीणा के उज्वल मंजुल तार थे।
३'आर्योदय' कल्याण के राग सदा झनकारते ॥३

जान रहा इतिहास तुम्हारी ज्योति कहानी,
प्रसारित प्रबल ४'प्रताप' चमत्कृत है लासानी,
गुंथी हुई है, अमर विचारों की मधुमाला,
पिला चुके हो 'आर्यवीर' को प्रेम पियाला।

तुमसे लेखक प्रेरणा कर्मवीर गुण गायनम्।
५'अर्जुन' के दो प्रण रहें 'न दैन्यं न पलायम्' ॥४

गुरुकुल गङ्गाधर के थे सबल समर्थक,
आर्य प्रतिनिधि सभा संहिता के आदर्शक,
आर्य राष्ट्र के निर्मल हें साकार सुदर्पण,
दयानन्द की श्रद्धा के सनान्द समर्पण।

हे वाग्मी व्रत वीर तव दुखदायक चिर मौन है।
शोकित या सन्तप्त नहीं कहो आर्य जन कौन है ॥५

नहीं मिलेगा कभी तुम्हारा भौतिक दर्शन,
नहीं मिलेगा कभी तुम्हारा मार्ग प्रदर्शन,
किन्तु तुम्हारी भाव पूर्ण दो धवल धरोहर,
आश्वासन है, यही कि रक्षित मान्य मनोहर।

वैचारिक रथ प्रगति के प्रगतिशील जो केन्द्र हैं।
रमे सदा आर्यत्व में श्री वीरेन्द्र-नरेन्द्र हैं ॥६

आर्य जाति के वरद् विचक्षण हे सेनानी,
संकट में रथ छोड़ चले हे ज्ञानी ध्यानी,
मान्य महाशय कृष्ण ज्ञान की मधुरिम माला,
युग युगान्त तक दे धरणी को नव उजियाला।
विश्व वाटिका में रहे प्रसरित सुरभि ललाम है।
प्रिय स्वीकृत हो देश का श्रद्धायुक्त प्रणाम ॥७

१. पंजाब। २. नवाव उसमान अल्ला। ३. हैदराबाद
४. उर्दू पत्र। ५. वीर अर्जुन हिन्दी पत्र।

: ३३ :

डा० मैथिलीशरण गुप्त

मान्य मैथिली शरण गुप्त कविता के प्यारे,
कीर्ति गगन के उज्ज्वल जगमग ज्योति सितारे।
भव्य भारती भारत की आंखों के तारे,
आज अचानक छोड़ हमें क्यों स्वर्ग सिधारे ॥१

भारत का गुरु गान 'भारती' में था गाया,
'यशोधरा' का सुयश धरा में था प्रकटाया।
'द्वापर' छवि के चित्र चरित्रण सुन्दर खींचे,
'गुरुकुल' जीवन वृक्ष वारि कविता से सींचे ॥२

दिया स्रोत 'साकेत' सलिल शुचि मंगलकारी,
लहरायी जिससे कि 'उर्मिला' जीवन क्यारी,
धन्य धन्य वह झाँसी का चिर गाँव मनोहर,
रही सुरक्षित कविता की जिसमें कि धरोहर ॥३

तार अचानक काव्य वीणा का टूट गया है,

संगीतों का संगम मानो रूठ गया है।
आकर कोई मोद मनोरम लूट गया है,
पंचभूत का कलश कलेवर फूट गया है ॥४

सत्य आपके दर्शन को हम पा न सकेंगे,
प्रमुदित मन से पद-वन्दन को जा न सकेंगे।
राम नाम अनुरक्त आर्य संस्कृति के हामी,
श्रद्धांजलि स्वीकार करो अविचल पद-गामी ॥५

: ३४ :

पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

ब्रह्मदत्त गुणधाम, व्रतीवर, वेद विहारी,
जिज्ञासु प्रत्यक्ष पुण्य प्रतिभा अधिकारी।
शास्त्रों के अविराम स्रोत मंजुल अविकारी,
तरुण अरुण से दीप्त तपोधन हे ब्रह्मचारी ॥१

संस्कृत-व्याकरण बोध वाटिका के प्रिय माली,
लुप्त हुई प्रकटाई फिर आर्ष प्रणाली।
ऋषिवर का आदर्श तुम्हारे मन को भाया।
आर्ष ज्ञान का कलित केतु तुमने फहराया ॥

आलोकित हो गई जनों की मनो दिशाएं,
शिष्य वर्ग की पूर्ण हुई प्यारी आशाएं।
संस्कृत या संस्कृति को नव उत्थान मिला था,
शिक्षा को प्राचीन महावरदान वरदान मिला था ॥३

पाणिनी मुनि के सूत्र दीप की ज्योति जगाई,
पुरातत्व की परम प्रभाती तुमने गाई।

सत्य विश्व पर एक महत्ता छोड़ गये हो,
और सभी से बुधवर, नाता तोड़ गये हो ॥४
अमर तुम्हारी गाथा गाती -काशी नगरी,
छोड़ गये हो जहाँ सुधा संस्कृत की गगरी ।
पण्डित मण्डल मस्तक के चर्चित हे चन्दन,
शत-शत बार तुम्हारा वन्दन है अभिनन्दन ॥५

: ३५ :

नरकेसरी सावरकर

जिन्होंने सदा देश के गीत गाये
उन्हीं की हमीं क्यों न जय आज बोलें ।
लिए देश-सेवा-सृजन की कहानी,
प्रवासी बने तो अलख ही जगा दी ।
सदा साधना की समाधी लगाये,
भरी भीरुता थी जनों की भगा दी ।
जिन्होंने मनो मुक्ति को दी दिशाएं,
उन्हें आज आओ मनों में टटोलें ॥१
महामुक्ति का मन्त्र गाते सुनाते
रहे क्रान्ति के दूत देवत्व लाये ।
सुधा स्नेह की धार धाराधरा में,
सदा दीप हिन्दुत्व के थे जलाये ।
जिन्होंने प्रभाती वसन्ती सुनाई,
उन्हें किस तुला भार में आज तोलें ॥२
नहीं वीर को बाँधती शृङ्खलाएं,
नहीं सिन्धु की वीचि सीमा सहेली ।

सदा सृष्टि ने वीर की वीरता को,
बनाया अनोखी सजीली पहेली।
उन्हीं की जयी जीवनी गङ्ग में ही,
निजी कल्मषों को कहो क्यों न धो लें ॥३

लिए नित्य निर्भीकता की पताका,
विदेशी विधानों को दी थी चुनौती।
जगे देश में स्वत्व सत्ता सलोनी,
मनाते रहे ईश से जो मनौती।
प्रगति प्रेरणा पूर्णिमा की प्रथा में
उन्हीं की कथा के सजे पृष्ठ खोलें ॥४

: ३६ :

आद्यक्षरी चित्र काव्य—

पं० श्री जीवन दत्त महाराज

आदर्शों के भानु ज्ञान की किरण पसारे,
दर्शन की अनुभूति अलौकिक मन में धारे।
बाह्याडम्बर शून्य पूत अन्तस् के हामी
लक्षण, लक्ष्य ललाम तर्क के सुन्दर स्वामी ॥१

ब्रह्म सूत्र-सौन्दर्य शिखा के शिखर समुज्वल,
चारु चरित्रों के चन्दन से चर्चित प्रतिपल,
रीति-नीति ऋषि, मुनियों की प्रभु प्रीति पगाये,
पंचम स्वर में गान कीर्ति कोकिल ने गाये ॥२

डिगे न श्रुति-पथ-निर्णय से जो ध्यानी ज्ञानी,
तत्वज्ञाता, उद्‌गाता मन्त्रों के मानी।
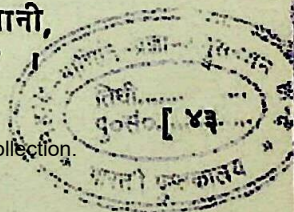
प्रबल प्रचारक देवगिरा, गायत्री गायक,
वर्णी वन्द्यविचार गंग तट नरवर* नायक ।।३

रहते थे निष्काम कमल जल उपमा धारे,
श्रीपति श्रेष्ठी पञ्चरीक चरणों में प्यारे,
जीवन जीवन दत्त दिया जनता को प्यारा ।
वरदानी ने वरदानों का प्रेम पिटारा ।।४

नवनिर्मित को धर्म धैर्य सम्बल थे पाये,
दयासिन्धु ने उन्नति पथ जन को दिखलाये ।
तस्यवाचकः प्रणवः के थे दीप जलाये,
महाप्राण, गुण-सन्धि, वृद्धि की सञ्ज्ञा लाये ।।५

हानि-लाभ, सुख-दुःख, दशा में समतल योगी,
रात्रिन्दिव अतिदीन हीन के शुचि सहयोगी ।
जप, तप, ध्यान, समाधि सिद्धि संयम के सांचे,
जीवन शुभ्र मराल सत्वगुण रंग में रांचे ।।६

कीर्ति कुमारी जनक देव, द्विज मुनि मनोहर,
जनता में संस्मरण आपकी धवल धरोहर ।
यतिवर जीवन नित्य धरा में ज्योति जगावे,
होवे प्रणव-परायण जन-मन मङ्गल गावे ।।७

*बुलन्दशहर जिले में गंगा तट पर वह स्थान जहां संस्कृत महाविद्यालय स्थापित किया ।

: ३७ :

माता श्री लक्ष्मी देवी

धन्य धन्य उत्तर प्रदेश का पुण्य स्थल वह नगर प्रयाग,
जहाँ त्रिवेणी का संरक्षित संगममय सिन्दूर सुहाग।
श्रीयुत रामचन्द्र१ के गृह पर छाया था अति ही आमोद,
जहाँ सुशोभित की लक्ष्मी ने उमरावति२ जननी की गोद ॥१
पूर्वजन्म की संचित कर्मों की निधि को जो लाई संग,
उससे ही उन्नति की उठती मानस में थी तरल तरंग।
प्राप्त हुआ शुभ अवसर जब-जब मिला सत्य शिक्षा सहयोग,
कर्मक्षेत्र में उतरी देवी पाकर संस्कारों का योग ॥२
था वाणी में ओज, और था मन में भरा हुआ यह चाव,
नारी जागृति-जय ध्वजा को फहराने का उत्तम भाव।
कठिन तपस्या दृढ़ता शुचिता ले आई थी सिद्धि समान,
कन्या गुरुकुल खोल दिया था करने को नारी उत्थान ॥३
जिला अलीगढ़ में सुशोभित है सुन्दर नगर हाथरस धाम,
उसके ही जंगल में मंगल आज हो रहा है अविराम।
दानी पंडित मुरलीधर३ की कीर्ति कला का दृढ़तर स्तम्भ,
चूर-चूर करता है प्रतिपल रूढ़िवादिता का दुर्दम्भ ॥४
ब्रह्मचर्य की लिए प्रतिष्ठा लेकर विद्या का संकल्प,
ब्रह्मचारिणी मनोहारिणी हैं दुर्गा का रूप अनल्प।
लक्ष्मी और सरस्वती देवी का आपस में मञ्जुल मेल,
श्रुति-सिद्धांत प्राप्त कर मानो खेल रहे हैं जीवन खेल ॥५
संस्कृत, संस्कृति शुभासोदरा नित्य जलाती रहती दीप,
सामवेद की मधुर ऋचाएं अध्वर का करती सामीप।
राष्ट्र-भावना संरक्षण का जहाँ उठाती अतुलित भार,
नारायण४ की कृपा को रसे है उद्घाटित स्वर्ग द्वार ॥६

संयम, शील स्नेह सुषमा के श्रद्धामय शुचि सत्य विचार,
वातावरण बनाते उज्वल तमस्तोम की करते हार।
'प्रणव' आर्य कवियों की कविता कन्या कोमल कलित किशोर,
लक्ष्मी माता का गुण गायन करता-२ अक्षय५ है चहुं ओर ।।७

१. पिता। २. माता। ३. गुरुकुल के भूमि दाता। ४. महात्मा नारायण स्वामी। ५. माता जी की पुत्री।

: ३८ :

लौहपुरुष पटेल

राष्ट्र शकट के संचालन को जिसने किया मार्ग-निर्माण,
भारतीय जनता का सोचा जिसने सतत महा कल्याण।
राष्ट्र द्रोहियों के डाली थी जिसने दृढतर नाक-नकेल,
वन्दनीय वीरों का 'वल्लभ' था नाहर सरदार पटेल ।।१

संघर्षों की झंझाओं में बुझा न जिसका साहस दीप,
मातृ-मुक्ति का मुक्ताफल था गांधी सागर का सा सीप।
अंग्रेजी शासन सत्ता को जिसने दी प्रतिपल ललकार,
झुका न सका किंचित 'करद' केसरी सहन किये थे—
अत्याचार ।।२

पारतन्त्र्य का पाश काटने को रहता था जो तैयार,
गांधी जी का हाथ दाहिना जिसे जानता सब संसार।
सबल संघटन नौका का बना रहा था मल्लाह,
तूफानों की मारों में भी डिगा नहीं जिसका उत्साह ।।३

सत्य अहिंसा के थे हामी किन्तु साधना वरद् विवेक,
'जैसा को तैसा ही देना' प्रतिपल रहते उसकी टेक।

अग्नि रूप शासक था सच्चा भरी विचारों में फौलाद,

इसीलिये भारत की मिट्टी लौहपुरुष कह करती याद ॥४

अंग्रेजी शासन की छाया हटो हुआ था स्वर्ण विहान,
देशी राज्य-समस्या का भी किया वोर ने सफल निदान।
ऐक्य सूत्र में वाँध नृपों को फूंका मंजुल मोहन मन्त्र,
सत्य अर्थ में आज सुशोभित जिससे भारतीय गणतन्त्र ॥५

आन्ध्र हैदराबाद क्षेत्र का शासक विगड़ा जब कि निज़ाम,
सेना भेज किया था सीधा रजाकार का काम तमाम।
आज शान से लहराता ध्वज जो कि तिरंगा आठों याम,
उसी वीर की पुण्य स्मृति में ले लहरें ललित ललाम ॥६

*जन्म स्थान

: ३९ :

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

मातृ भूमि की आँखों के उज्ज्वल से तारे,
नर-नायक पर दीन हीन के अतिशय प्यारे।
नीति-नियन्ता आर्य जाति के दृढ़तर नेता,
यतिवर संयम ध्यान, धारणा के शुचि चेता ॥१

श्रीधर श्रुति स्वाध्याय उदधि के मंजुल मोती,
स्वाभिमान की लहर सदा ही जिसको धोती।
मीत शत्रु ने सदा एक सा जिनको देखा,
स्वत्व-सारणा की न रही मस्तक में रेखा ॥२

तंत्री सी झनकार स्नेह के तार मिलाते,
त्राता त्रस्तजनों के थे पीयूष पिलाते।

नंदन वन भी कभी सजी कर लुभा न पाया,

दयानन्द मठ सदा मान से मन को भाया ॥३

मनमोहक है, शोलापुर की कार्य कहानी,
हारी जिससे भाग्य नगर की जड़ 'उसमानी'।
राष्ट्र-वन्दना धर्म धनी को सदा सुहाई,
जगती में शहनाई जय की मधुर बजाई ॥४

कीर्ति कौमुदी वसुन्धरा में छाई जाती,
जय मुरली में स्मृति रागिनी गाई जाती।
यति जीवन अवदातप्रेरणा देवे प्यारी,
होवें ऋषि के भक्त सदा ही नर अरु नारी ॥५

। ४० ।

पं० श्री गंगा प्रसाद उपाध्याय

हारे जीवन में न कभी श्रम से घबराये,
पंकज होकर नहीं पङ्क में जो सन पाये।
डिगे न जो स्वाध्याय सुपथ से पूज्य हमारे,
तत्पर आर्य समाज-कार्य में स्वर्ग सिधारे ॥१
श्री चरणों में रही कला१ लेखन मनमानी,
गंगोदक गुण राशि पूर्ण प्रतिभा पहिचानी।
गाये गौरव-गान सदा संस्कृति सजनी के,
प्रकटाये गुरु ग्रन्थ कल्पतरुवर अवनी के ॥
सामञ्जस्य प्रकाश२ सत्य के विश्व३ विनोदी,
दर्शन दिव्य कुबेर शास्त्र स्यन्दन के मोदी।
'जीवन चक्र'४ तुम्हारा सहसा ऐसा सोया,
उल्लासों का मधु प्रयाग शोकित हो रोया ॥३

पाकर तुमसे स्नेह सहस्रों दीप उजाले,
ध्यान, धारणा, धैर्य्य धनों के हैं रखवाले।
यज्ञ निरन्तर चला साधना का शुचि भारी,
एक पिता के सभी पुत्र हों आज्ञाकारी ॥४
मन में शिवसंकल्प सुधी ने यही विचारा,
वेद धर्म का गौरव ही सबको हो प्यारा।
गये 'प्रणव' के अङ्क अचानक पूज्य हमारे,
श्रद्धांजलि स्वीकार करो जगती के प्यारे ॥५

१. धर्म पत्नी। २. स्वामी सत्य प्रकाश। ३. प्रो० विश्व प्रकाश।
४. आत्मकथा।

: ४१ :

पं० श्री हरिशंकर शर्मा कविरत्न

हास्य रुदन में बदला क्या दुर्भाग्य हमारा,
पंछी उड़कर चला, नहीं परिवार निहारा।
डिगे न जो कर्त्तव्य क्षेत्र में ध्यानी मानी,
तत्पर आर्य समाज कार्य में थे वरदानी ॥१
श्री-विहीन साहित्य सुमन सब मुरझाये से,
हन्त बसन्ती गौरव गण हैं, अकुलाये से।
रिक्त हुआ जो स्थान नहीं होता है पूरा,
शंकित आर्य समाज रह गया कार्य अधूरा ॥२
कर सुजनों पर 'कृपा'१ 'दया'२ दे 'विद्या'३ भारी,
रम्य रत्न सम शिष्य बनाये यश-अधिकारी।
जीवन का कल केतु उच्च ऐसा लहराया,
शत-शत त्याग, तपस्या का अनुराग दिखाया ॥३

रश्मि रथी के रश्मि ज्ञान का भव्य उजाला,
मान्य बने थे 'आर्यमित्र'४ सन्त 'निराला'५।
फलित कल्पना हास्य विनोदों के थे सागर,
विद्वद्वन्द वरेण्य भारती नागर आगर॥
रहे सर्वथा 'पद्म श्री'६ से शोभित प्यारे,
तरुण सर्वदा, वृद्ध जरा से जरा न हारे।
नतमस्तक हैं व्यथित पूज्यवर भक्त तुम्हारे,
हे हरि, शकर-पुत्र मुक्ति के महल पधारे॥५

१. कृपा शंकर। २. दयाशंकर। ३. विद्याशंकर। ४-५ सम्पादक।
६. राष्ट्रपति से प्राप्त पद जो कि वापिस कर किया।

: ४२ :

हा पं० श्री रामचन्द्र जी देहलवी

हानि अचानक हुई, आर्यकुल भूषण प्यारे,
पंचतत्व में मिले पूज्य विद्वान् हमारे।
डिगे न जो शास्त्रार्थ समर में अद्भुत योद्धा,
तत्व ज्ञाता विश्वमतों के अनुपम बोद्धा॥१
श्रीयुत शान्त स्वभाव मन्द मुसकान मनोहर,
रक्खी सदा सुरक्षित वैदिक ज्ञान धरोहर।
मंजुल शैली स्नेहपूर्ण, थे तर्क नुकीले,
चंचल चाल भुजङ्ग मतों के जिनसे कीले॥२
द्रव्यादिक गुण, कर्म, पदार्थों के गुरू ज्ञाता,
जीवन दर्शन आदर्शों के वर व्याख्याता।
देकर अविरल दैन मधुर वाणी की प्यारे,
हरते थे सन्ताप श्रोतृ मण्डल के सारे॥३

लहराई सर्वत्र सुधी ने विजय पताका,
बीत रही हो मत पन्थों की जैसे राका।
व्यापक पुण्य-प्रधान आर्य जगती में छाया,
ख्याति सलोनी ने उनको जी भर अपनाया ।।४

नव मुस्लिम प्राचीन अनेकों आर्य बनाये,
महर्षि दयानन्द के सुन्दर उपदेश सुनाये।
हारी सदा कुरान और इञ्जील लजीली,
रवि से ज्यों ग्रीष्म में हो हरियाली पीली ।।५

थी प्रतिभा प्रभुदत्त अलौकिक सरला शैली,
'प्रणव' पिता की गोद गये गरिमा के स्वामी,
श्रद्धाँजलि स्वीकार करो हे नामी ग्रामी ।।६

: ४३ :

प्रधानमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री

ओ भारत के लालबहादुर अमर वीर वरदानी।
विश्व शान्ति के अग्रदूत तुम थे जगती में लासानी ।।

भोला सा शैशव वैभव के नहीं पालने में झूला,
नई जवानी के मधुवन में नहीं ध्येय को जो भूला।
पाकर स्वर्णिम सिंहासन भी नहीं गर्व से जो फूला,
ऐसा प्रिय व्यक्तित्व तुम्हारी रहा बजाता अगवानी ।।१

ओ 'वामन' तेरी लघिमा से महिमाएं सब शरमाईं,
तेरे विक्रम पूर्ण चरण से बलि-आशाएं घबराईं।
भूमण्डल से स्वागत को जयमाला दौड़ी आई,
अल्प काल में नीति पताका गगनाङ्गण में फहरानी ।।२

तुम श्रीराम दुलारियों के प्यारे लाल लजीले थे,
तुम ललिता सी शान्ति शुभा के शुचि शृङ्गार सजीले थे।
फौलादी साँचे में ढाले प्रण पर सदा अड़ीले थे,
लोकप्रियता कल्पलता या जीवन तुम से लहरानी ।।३

तुमने बैरी दर्प दलन को शौर्य मन्त्रणा दे डाली,
वीर राष्ट्र ने तन मन धन की शीघ्र आहुती दे डाली।
पौरुष ने तब जय भारत की भव्य भूमिका लिख डाली,
इतिहासों के पृष्ठ सदा बोलेंगे तेरी जय वाणी ।।४

कर कर जिसकी याद धरातल अश्रु धार से मुख धोता,
चिड़ियां चुग गई खेत कहो फिर पछिताने से क्या होता।
काल रात्रि बनकर क्या आया ताशकन्द का समझौता,
रस रसनिधि विधु प्रथम मास की शशि, शशिशोभा—
बिलखानी ।।५

अमर तुम्हारी गौरव गाथा प्रियवर अमर विदाई है,
अमर राष्ट्र ने चरणों में श्रद्धांजलि अमर चढ़ाई है।
प्रणब पिता के पावनाङ्क में सौम्य समाधी पाई है,
सेनानी बन गया अचानक शान्ति-सृजन को बलिदानी ।।६

: ४४ :

राजगुरु पं० धुरेन्द्र जी शास्त्री

स्वामी ध्रुवानन्द स्मृति

तुम नियति के नित्य नेता न्याय१ नियमाधार थे,
कर्म-कञ्चन की कसौटी प्रेम-पारावारा थे।
वर व्रतों के पालने में प्रिय न अकुलाये कभी,
श्रमसुधा पीते रहे पुण्य फल पाये सभी ।।१

शुचि सदाचारी सुदृढ़ धीर धारी आप्त थे,

ब्रह्मचारी वीर विक्रम विज्ञता को प्राप्त थे।
सत्य श्रम से ही मिली थी भारती सुरभारती,
नित्य वैदिक धर्म की जिसने उतारी आरती ॥२

'सर्वदा आनन्द'२ पथ के पथिक प्राण प्रवीण थे,
'साधु आश्रम' की स्तुति में तुम बजाते वीण थे।
विप्रभावों से भरित प्रभु-भक्ति में रहते सने,
उच्चतर वर विज्ञाता से "राजगुरु'३ भी थे बने ॥३

देश की या धर्म की निःस्वार्थ सेवा-साधना—
रङ्ग लाई, पद-प्रतिष्ठा की हुई थी स्थापना।
'सार्वदेशिक' श्रुत सभा के तेजपुञ्ज प्रधान थे,
आर्य जनता जागरण के वन्दनीय विधान थे ॥४

प्रकट सत्याग्रह शिलाओं पर लिखे जय अङ्क थे,
सत्य-अर्थ-प्रकाश में हो तुम सतत निःशङ्क थे।
तुम विदेशों में गये ले वेद की शहनाइयाँ,
पाटने को स्नेह से मन पन्थवाली खाइयाँ ॥५

'आत्म-आनन्द'५ प्रेरणा से दिव्य दीक्षा धार में—
स्नान कर संन्यस्त हो विचरे धरा परिवार में।
नाम ध्रुव-आनन्द से ही त्याग तरणों में चढ़े.
योग से संयोग कर फिर मुक्ति-पथ में चल पड़े ॥६

सुकृतिमय आदर्श-जीवन प्रगति का प्रतिबिम्ब हो,
विश्व में विख्यात वैदिक धर्म मति-अवलम्ब हो।
प्रणव-मानस क्षेत्र में थे काव्य-केशर क्यारियाँ,
अर्चना प्रतिदिन सजावें सुरभि की सुकुमारियाँ ॥

१. न्याय शास्त्री। २. पूज्य गुरुवर। ३. शाहपुरा के राजगुरु।
४. कांग्रेस-सत्याग्रह, हैदराबाद तथा सिन्ध सत्याग्रह।
५. संन्यास दीक्षा के गुरु।

स्वामी सोमानन्द जी

(पं० नरेन्द्र जी हैदराबाद)

मातृभूमि के लाल समुज्वल शोभा शाली,
नय निर्धारण में प्रतिभा क्या थी नव्य निराली।
नीर क्षीर विवेक विद्या के प्रिय अनुगामी,
यम नियमों के धनी सुधी सोमानन्द स्वामी ॥१

पंकिल पथ से दूर सत्य के सतत पुजारी,
डिगा सकी नहि तुमको कोई बाधा भारी।
तत्व ज्ञान, ध्यानी, मानी, मान्य मनीषी,
श्री चरणों में रही सेविका बन अपनी सी ॥२

नरवर सिंह समान जगत में निर्भय विचरे,
रश्मि रथी सम भास मान प्रिय भू पर उतरे।
इन्द्र धनुष सी भाग्यनगर१ में सुषमा धारें,
जीवन रथ की कीर्त्ति ध्वजा को रहे संवारे ॥३

कार्यक्षेत्र के धर्म धनंजय जय-उद्गाता,
संचालित सत्याग्रह२ था वीरत्व प्रदाता।
न्यारा ही व्यक्तित्व व्रती का होता प्यारा,
सदा उसी के लिए नयन की बहती धारा ॥४

आर्य जाति के रत्न त्याग का याग रचाया,
श्रम से सिंचित सुकृति पुण्य-पादप लहराया।
मन में था 'उसमान अली'३ रहता अकुलाया,
प्रखर रूप था वाणी ने ऐसा प्रकटाया ॥५

वेश तुम्हारा गैरिकवसनी पूज्य हुआ था,
शतपथ के युग में विचरण का समय हुआ था।

मंत्र महोज्वल वेद-सदन के सहचर प्यारे,

गति में थे पाथेय सबल अर्थों के धारे ।।६

लगी लग्न थी 'प्रणव' पिता के गुण गाने की,
महा ऋषि के सत्य अर्थ के फैलाने की ।
यतिवर आर्य जगत से ली थी दुखद विदाई,
होवे स्वीकृत श्रद्धा पूरित प्रेम बधाई ।।७

१. हैदराबाद (आ० प्र०) । २. हैदराबाद सत्याग्रह १६३८ में ।
३. निजाम हैदराबाद का शासक ।

: ४६ :

पं० वाचस्पति शास्त्री, आगरा

हानि-लाभ, सुख-दुःख दशा में समता धारे,
भ्रातृभाव, सद्भाव सुमन के सौरभ प्यारे ।
तामस से अतिदूर सत्व के स्वर्ण खजाने,
पंचतत्व में मान्य-मनीषी आज बिलाने ।।१
डिगे न मौलिक मार्ग-चयन में 'उदयन' पाये,
तत्वज्ञान-विधान-धनी शैली अपनाये ।
श्री से भी उपराम, कीर्ति कानन के वासी,
वाणी-कोष-कुबेर बिना है, अमित उदासी ।।२
चर्चा केवल शेष रही, व्याख्यान कहानी,
स्पर्द्धा में हार गये उपदेशक मानी ।
तिलक विचारक वृन्द-भाल के मौलिक चेता,
जीवन सादा उच्च विचारों के निधिक्रेता ।।३
शास्त्रार्थों का जेता, नेता बाजी हारा,
स्त्री या परिवार, पुत्र मित्रों का प्यारा ।

महामध्य मझधार नाव को छोड़ गया है,
होता, यज्ञ गृहस्थ अधूरा छोड़ गया है ॥४
पवन भवन में हाय चली ऐसी दुखदाई,
देते शोकित आर्य बन्धु हैं अन्त्य विदाई।
शशि सा जीवन छोड़ 'प्रणव'* के अङ्क पधारे,
करिए स्वीकृत श्रद्धांजलि हे मान्य हमारे ॥५

* पुत्र प्रो० उदयन।

: ४७ :

पं० प्रकाशवीर शास्त्री

ओ वाणी के जादूगर, प्रिय तुमको बारम्बार प्रणाम।
आर्य जगत के उज्ज्वल नेता तुमको बारम्बार प्रणाम ॥

१'रहरा' में तुम जन्मे किन्तु न रहरों में तुम रह पाये,
मातृ भूमि की विपुल व्यथा को तुम न देख सुन सह पाये।
तुम तैराक जन्म के ऐसे जो न धार में बह पाये,
सावधान तुम तूफानों में रहे निरन्तर आठों याम ॥१

२गुरुकुल गङ्गा में मल को तुम मलमल खूब नहाये थे,
३नरदेवों की चरण-शरण में चर्चित आशीष पाये थे।
इसीलिए ४ विद्या के भास्कर बनकर भू-पर आये थे,
आलोकित कर दिये किरण देश-विदेश प्रांत या ग्राम ॥२

श्रुति मन्त्रों के मान्य मनोहर अविरत रत अध्येता थे,
उपनिषदों की ब्राह्मबुद्धि के नव्य निष्ठ नचिकेता थे।
वीर विजेता आर्य राष्ट्र के गौरव गायक नेता थे,
नायक५ सत्याग्रह-समरों के अमर तुम्हारी कीर्ति ललाम ॥३

वैदिक धर्म ध्वजा उत्तोलक कृति की नित्य निशानी थे,

संस्कृत पुण्य श्लोक अमर हिन्दी की कलित कहानी थे।

भारतीय संसद के सचमुच वक्तावर लासानी थे,
मान्य जवाहर, लालबहादुर, जगजीवन के प्यार प्रकाम ।४

तुमने ज्ञान कर्म की निष्ठा का अविकल आकार दिया,
६विरजानन्द कुटीर, भवन नव७ नारायण उपहार दिया।

हरिद्वार में आर्य भवन पर श्रम को कर साकार दिया,
कर्म-कसौटी के हे कंचन, वन्दन तेरा ज्योति धाम ।।५

प्रिय प्रकाश यश-ओजपुञ्जल में राजहंस९ सम ढले गये,
मंजिल से पहिले ही निश्छल अर्द्ध ※ मार्ग में छले गये।

१०विश्व बन्धु पर छोड़ सभा का स्पन्दन तुम तो चले गये,
११शिवस्तु ते पंथानं प्राप्त कर१२प्रणव पिता का पावन धाम ।६

१३मुगल पुत्र की आशाओं का सहसा तोड़ विमान चले,
तुम१४ यशोज के शृङ्गारों का क्यों उजाड़ उद्यान चले ?

स्नेह यज्ञ को छोड़ अधूरा रूठे से यजमान चले,
आर्य राष्ट्र की अश्रु-अञ्जली मान्य करो स्वीकृत अविराम ।७

१. जन्म स्थान (मुरादाबाद जिला) २. महाविद्यालय गुरुकुल ज्वालापुर, ३. गुरुकुल के कुलपति पं० नरदेव शास्त्री, ४. गुरुकुल की उपाधि, ५. हिन्दी सत्याग्रह तथा गोरक्षा सत्याग्रह, ६. गुरुधाम मथुरा, ७. नारायण भवन लखनऊ, ८. आर्य समाज हरिद्वार, ९. पं० बालदिवाकर 'हंस' १०. पं० विश्व बन्धु शास्त्री, प्रधान आर्य प्र० नि० सभा उत्तर प्रदेश, ११. पं० शिवकुमार शास्त्री के भ्राता तुल्य, १२. 'प्रणव' शास्त्री के मित्र, १३. प्रदीप और प्रमोद, १४. धर्मपत्नी, ※जयपुर से दिल्ली आते समय

महात्मा आनन्द स्वामी

प्रणाम उनको सदा हमारा जो नाम अपना कमा गये हैं।
सिखा के जिन्दादिली सभी को जो जिन्दगी को गमा गए हैं।।

उदात्त वैभव ने जीवनी में बड़े करिश्मे यहां दिखाए,
समस्त सुविधा की अप्सरा ने मधुर तराने यहाँ सिखाए।
रमे रमा के न रम्य रङ्ग में विचित्र धूनी रमा गए हैं।।१

महाविषों के समुद्र में भी जरा न हिचके, कभी न ठिठके,
सजग सदा ही परोपकारी सुकार्य में जो कहीं न झिझके।
न धैर्य्य त्यागे कभी भी मानव कि मन्त्र सम्बल थमा गए हैं।।२

न वस्त्र रंगने से कोई स्वामी कभी जगत् में कहीं कहाता,
उसे ही योगी पुकारते हैं, समाधि सङ्गम में जो नहाता।
वे दूर कैसे कहाँ से होंगे मनों में जो समा गए हैं।।३

भुला सकेंगे कृतघ्न कितने सुनी सभा में जो मिष्ट वाणी,
अजीब मस्ती, सहास्य चर्चा, सदा वहारों को इष्ट प्राणी।
सुरंग फीका कभी न होगा जो रंग अपना जमा गए हैं।।४

सजीली मौजों में तैरते थे रंगीली लेकर जो योग मुद्रा,
अनूप१ यश है, विशाल२ रण में रहा समुज्वल सु-धी स-मुद्रा।
महोच्च आनन्द प्राप्ति को जो प्रणव-सदन में समा गए हैं।।५

जिन्होंने ऋषि की परम्परा में प्रचार प्रभुता की ठान ठानी,
स्वराष्ट्र वैदिक जयी पताका लिए सुनाते चले कहानी।
उन्हीं की चर्चा है महफिलों में जला जो अपनी शमाँ गए हैं।।६

१. ज्येष्ठ पुत्र—यश। २. कनिष्ठ पुत्र—रणवीर।

: ४६ :

स्वामी ब्रह्ममुनि महाराज

स्वाध्याय सत्संग-सुधा ने चमत्कार क्या दिखलाए।
धूलि धरातल कण उन्नति के शुभ शिखर पर बिठलाए।।
विधि विधान की निष्ठुरता से त्याग याग कर जाते हैं।
वे जगती ने मधुर प्यार के झूले में हैं झुलवाये।।१
वरण किया विद्या ने उनको वैभव सारा सौंप दिया,
प्रतिभा ने पांडित्य प्रभा का बीजाङ्कुर भी रोप दिया।
बने लोक१'प्रिय रत्न' आर्ष वे चतुर्दिशा में चमकाए।।२
श्रवण, मनन, अध्ययन और बस आराधन अध्यापन में,
याज्ञवल्क्य सम चिंतन चर्चा या प्रवचन के प्राङ्गण में।
संयम के सांचे में ढलकर ब्रह्ममुनीश्वर कहलाए।।३
लक्ष्य समक्ष विलक्षण था बस गुरु ग्रन्थों का प्रणयन ही,
ज्ञान कोष से मानव मंगल 'प्रणव' राष्ट्र का उदयन ही।
अभिनन्दन में चन्दन सा सौरभ जो बिखराए।।४
विश्व विभूति वसन्त जानकर कीर्त्ति कोकिला गान करें,
२'बृहद् विमान शास्त्र' की रचना से३ शासन सम्मान करें।
उपहारों के हार समुज्ज्वल प्रभुताओं ने पहिनाए।।५
मानस सर का राजहंस क्यों तट तड़ाग का वासी हो ?
मुक्तामुक्ति संजोने वाला क्यों अभुक अभिलाषी हो ?
जो उद्गीथ गीत का गायक लोक गीत वह क्यों गाए।।६
इसीलिए ही ब्रह्म-लोक को तुमने पुण्य प्रयाण किया,
लोकोत्तर आनन्द गङ्ग में तुमने जा स्नान किया।
मुक्ति महल सम्राट् भला क्यों अवनी में आये जाये।।७

१. पूर्व नाम प्यारे लाल संस्कृति करण। २. प्रसिद्ध निर्मित महान् ग्रन्थ।
३. अनेक ग्रन्थों पर राजकीय सम्मान एवं पारितोषिक प्राप्त हुआ।

पंचमस्वर संगीत साम के गायक प्यारे,
डिगे न कोई कदम साधना-पथ में धारे।
तमस्तोम से दूर दुग्ध सी कीर्त्ति पसारे,
श्रीधर १पुष्पा रमारम्य आंखों के तारे ।।१

प्रतिभा प्रवर प्रसिद्ध सुकृति रचना के हामी,
काव्यानन्द समाधि-सिद्धि के साधक स्वामी।
शत शत २स्नेही लता सफलता के मधु माली,
चंचरीक सम चाख रहे रस रीति प्रणाली ।।२

द्रवित हृदय-सौहार्द्र गङ्ग में स्नान कराते,
जीवन दे जीवन को जीवन ज्योति जगाते।
कलित कल्पना मौसम के मधु मास निराले,
विबुध जनों को पिला गए ३पीयूष पियाले ।।३

रत्न-राशियाँ सागर की तुमने बिखराई,
कान्ति पदावलि आर्य, सुभग सिद्धांत सुहाई।
अक्षय यश-प्रासाद प्रतिष्ठित पण्डित ज्ञानी,
भिन्न-भिन्न भावों के भावुक अविरत दानी ।।४

नंदन सुख सम्प्राप्त आप्त उपदेश विहारी,
दयानन्द ऋषि-चरणों के प्रिय प्रेम पुजारी।
नयी सूझ के सन्त, सजग साहित्य मनीषी,
सबल सदा रचनाएं होती सत्य सनी सी ।।५

दत्य-दलन को वीर-भाव तुमने उपजाये,
वरद वेद के ४डङ्का भी तुमने बजवाये।
मंजुल मोहन मंत्र कलामय काव्य भवानी,
गर्वित गंगाधार धरा में रहे रवानी ।।६

ललित जगत में सूर्य चन्द्र सम मित्र मनोहर,

मन में हो प्रभु प्रणव प्रेम की धवल धरोहर।
यह अभिनन्दन वन्दन चन्दनन सा सुखदायी,
होवे संस्मृति दिवस युगों का प्रिय पर्यायी ॥७

१. पत्नी पुष्पा देवी। २. पुत्री स्नेहलता प्रसिद्ध गयिका। ३. शिष्य पं० पन्नालाल पीयूष 'संगीत प्रभाकर'। ४. प्रसिद्ध गीत - 'वेदों का डंका आलम में बजवा दिया।

: ५१ :

पं० जगदेव सिंह 'सिद्धान्ती', शास्त्री

पंडित पुङ्गव, शास्त्र-विचारिक ज्ञानी ध्यानी,
डिगे नहीं शास्त्रार्थ समर में हार न मानी।
तत्वज्ञाता, उद्‌गाता उद्‌गीथ स्वरों के,
श्रीपति सम धौरेय धवल ध्रुव धीर-धरों के ॥१

जगती में स्वाध्याय-सिन्धु के पारगामी,
गति, मति, प्रगति प्रकाम महामेधा के स्वामी।
देव-दयानन्दर्षि-विचारों के अभिनेता,
वरद वेद-विज्ञान मान के अभिनव चेत्ता ॥२

संचित पुण्य-प्रताप पिता से तुमने पाया,
हरियाणा-निर्माण-नीति का शङ्ख बजाया।
जीवन का जय चक्र निरन्तर घूम रहा था,
सिद्ध-साधना मस्ती में मन झूम रहा था ॥३

अंतराल में दर्शन की थी शीतल छाया,
तीन ताप के दाप-दलन का अवसर पाया।

शासन में अनुशासन की प्रिय प्रथा प्रचारी,
स्त्री कुल संस्तुत्य, भारती-दशा सुधारी ॥४

काल किन्तु बलवान दुखद यह लाया बेला,
अस्थिरता को सौंप दिया जीवन का मेला।
भिन्न हृदय हो गये आर्यगण गुणी जनों से,
नंदन वन को चले, सुपरिचित लोक वनों से ॥५

दयानन्द की दिव्य वाटिका के हे माली,
नत मस्तक हैं, चारु-चरण में आर्य प्रभाली।
मंत्र-मधुर तम संसद में शतवार सुनाये,
गत गुरु-गौरव-दीप देश में पुनः जगाये ॥६

लहराई भूतल में अतुलित तर्क-पताका,
मची धरणि में धूम प्रकम्पित मिथ्या राका।
यही भावना बसी 'प्रणव' आर्यों के मन में,
होवे जय-जयकार सदा युग-आरोहण में ॥७

: ५२ :

माननीय श्री शिवसागर राम गुलाम गवरनर जनरल मारीशस

की याद में

माता, मातृभूमि के प्रति जो निज श्रद्धा प्रकटाते हैं,
नर नायक लायक वे भू में गौरव पद को पाते हैं।
नीच-ऊँच के भाव न जिनके मन में कभी समाते हैं,
यज्ञादिक शुभ कृत्य नित्य यही जीवन में अपनाते हैं ॥१

अधिप होकर भी न कभी जो मन में अपने इठलाये,
शिखा, सूत्र की संस्कृति के ही गीत मधुर जिसने गाये।
वही विश्व में विघ्न-घनों का चीर सूर्य सम चमके हैं,
साध्य सिद्धि के लिए साधना स्वर्णिम से ही दमके हैं ॥२

गति मति जिनकी एक रही हो लिए पूर्वजों की थाती,
रथ की प्रगति न रुकने पाई बाधाएं आती-जाती।
राष्ट्रीय निष्ठा ने जिनको जय माला पहिनाई है,
मधुर स्वरों में सजी उन्हीं की भूतल में शहनाई है ॥३

गुण ग्राहक, चातक से चाहक स्वांति सत्य के अभिलाषी,
लालायित जो रहे बाँटने कण-कण को सुविधा राशी।
मन में पितृभूमि भारत के लिए अमित श्रद्धा प्यारी,
गत दिवसों में आते जाते रहे उच्च बन अधिकारी ॥४

वक्ता धर्म धुरीण, कर्मरत तुम स्वदेश के नेता थे,
रक्षक प्रिय आर्यत्व प्रथा के सचमुच आत्म विजेता थे।
नहीं प्रलोभन उग्रवाद-भय पथ से तुमको डिगा सका,
रवि सम उज्वल जीवन में भी नहीं लाञ्छना लगा सका ॥५

जन मन गण के अधिनायक हे ! तुमको नमन हमारा है,
नर नारायण की सेवा में ही बीता जीवन प्यारा है।
रहे विचरते वैदिक पथ में 'चरैवेति' के पर्यायी,
लग्न लगी जो सम्मेलन की पूरी कर वह दिखलायी ॥६

मानवता के संरक्षण ही जीवन-नाटक खेला था,
रीति, नीति, उपकार, प्रीति का सदा लगाया मेला था।
शत शतवार मुक्ति-मानस के राजहंस का वन्दन है,
सजल 'प्रणव' की काव्य-कड़ी ये करतीं हार्दिक वन्दन है ॥७

कीर्त्ति कोकिला गायेगी सदियों तक अमर कहानी को,
याद करेगा आर्य जगत नित गुञ्जित१ अलवर वाणी को।
दयानन्द की दिव्य-वाटिका का यह सुमन न कुम्हिलाये,
मेंहदी सा रंग, गन्ध गुणों की, सदा याद यह विखराये ॥८

१ अलवर आर्य महा-सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण।

: ५३ :

राजपाल सिंह शास्त्री सम्पादक, ने नीलिमा प्रिंटर्स दिल्ली-६
में छपवाकर 'मधुर लोक' कार्यालय बाजार सीताराम दिल्ली-६
से प्रकाशित किया।

आर० आर० नं० १४२४३-६१
Licenced to post without prepaym
फरवरी १६८
मधुर-लोक कार्यालय, आर्य समाज मन्दिर, ब